आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजभाषा

विश्वामित्री

प्रथम अंक-2023-24

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, वडोदरा

पंचदीप भवन, उर्मी सोसायटी, अलकापुरी, वडोदरा (गुजरात) - 390 007

स्वच्छता पखवाड़ा - 2023 के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय में उपस्थित
अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के मार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

राजभाषा विश्वामित्री प्रथम अंक (2023-24)

संरक्षक

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

श्री महादेव मीना
उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादन एवं टंकण सहयोग

श्री पंखी लाल मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

संपादन समिति

श्री विरेन्द्र सिंह पाल
कार्यालय अधीक्षक

कुमारी तरनप्रीत कौर
कार्यालय अधीक्षक

कुमारी पारुल गोयल
कार्यालय अधीक्षक

प्रकाशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा
पंचदीप भवन, उर्मी सोसायटी, अलकापुरी,
वड़ोदरा (गुजरात) - 390 007
दूरभाष: 0265-2961442 ई-मेल: dir-vadodara@esic.gov.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित रचनाकारों का है। इनमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश - माननीय महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम	महानिदेशक	4
2.	संदेश - माननीय बीमा आयुक्त (राजभाषा)	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	5
3.	संदेश - माननीय बीमा आयुक्त (पश्चिम क्षेत्र)	बीमा आयुक्त (पश्चिम क्षेत्र)	6
4.	संदेश - माननीय क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)	क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)	7
5.	संरक्षक की कलम से	उप निदेशक (प्रभारी)	8
6.	संपादक की कलम से	उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)	9
7.	महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती	महादेव मीना	10-11
8.	भारत चंद्रयान - 3	रोहन कुमार मीना पुत्र श्री महादेव मीना	12
9.	बोधिसत्व	मुकुल वत्स	13
10.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम: सूचना प्रौद्योगिकी से पूर्व एवं वर्तमान में	कुमार कुंजन	14
11.	चित्रकला (पेंटिंग)	रोनित राज पुत्र श्री कुमार कुंजन	15
12.	इजरायल हमास युद्ध	दिलीप कुमार झा	16
13.	अनसुनी	बी. इप्सिता पुत्री श्री पी. के. बारीक	17
14.	यज्ञसेनी (चित्रकला)	बी. इप्सिता पुत्री श्री पी. के. बारीक	18
15.	हिंदी की रक्षा करना हमारा विवक्षित दायित्व है	वीरेन्द्र सिंह पाल	19
16.	हिंदी का सम्मान	वीरेन्द्र सिंह पाल	20
17.	हिंदी: हमारी शान	मानवी सिंह पुत्री श्री वीरेन्द्र सिंह पाल	21
18.	हिंदी केवल भाषा नहीं बल्कि हमारे संस्कृति का अभिन्न अंग है	हनुमान प्रसाद	22
19.	कर्म सिद्धांत	कुमारी चारुल गोयल	22
20.	कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ		23-25
21.	चिड़िया दा चंबा	तरनप्रीत कौर	26
22.	बच्चों में बढ़ता क्रोध एवं बोलने की समस्या	अजित कुमार सिंह	27
23.	स्वाद मेरे बिहार का लिट्टी चोखा	रोशन कुमार	27
24.	व्यायाम का महत्व	रौनक एच. परमार	28
25.	कामायनी	रेनु धीमान पत्नी श्री सुनील कुमार	29
26.	संकुचित होती परिवार की अवधारणा	पंखी लाल मीना	30
27.	वो दौर कैसा होगा	मनीष श्रीवास्तव	31
28.	एक छोटा सा दीया बेहतर है अँधेरे से	अखिलेश अग्रवाल	32
29.	जिंदगी: एक अनोखा सफर	प्रमिला	32
30.	परिवार पर कविता	रिंकू कुमार मीणा	33
31.	मीणा: आदिवासी एक परिचय	पंकज कुमार मीणा	34-35
32.	धरती हमारी नहीं, हम धरती के हैं	नरोत्तम कुमार मीना	36
33.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	जितेन्द्र मीणा	37
34.	होली, मैं और तुम	विकास शुक्ला	38
35.	पापा तुम कब घर आओगे	पूजा उपाध्याय	39
36.	इंदौर: भारत का स्वच्छतम शहर	पूर्णिमा सिसोदिया	40
37.	अभी शुरुआत है/ चार लोग/ दिल की बात	दीक्षांत मेहता	41
38.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम: सामाजिक सुरक्षा	राकेश सैनी	42
39.	राजभाषा हिंदी: चुनौतियाँ एवं समाधान	हरीश चन्द्रा	43
40.	राजभाषा से संबंधित महत्त्वपूर्ण नियम		44-45
41.	हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना - वर्ष 2022 के अंतर्गत पुरस्कृत कार्मिक		46
42.	मूल हिंदी टिप्पण - आलेखन प्रोत्साहन योजना - वर्ष 2022-23 के अंतर्गत पुरस्कृत कार्मिक		46
43.	वर्ष 2023 में आयोजित हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिताओं के विजेता		47-48

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry Of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel.: 011-23604740
Website: www.esic.gov.in

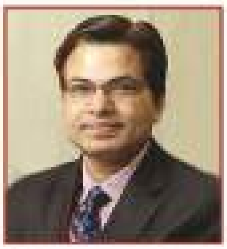

संख्या: ए-49-17/1/2016-रा.भा.
दिनांक: 19/12/2023

डॉ. राजेन्द्र कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा राजभाषा कार्यान्वयन में सक्रियता के साथ संलग्न है और हिंदी गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** के प्रवेशांक का प्रकाशन करने जा रहा है। हिंदी के विकास में गुजरात प्रांत की विभूतियों का आधारभूत योगदान रहा है। उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा का यह प्रयास भी हिंदी की यात्रा का एक महत्वपूर्ण सोपान बने।

पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र कुमार
(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
क.रा.बी. निगम
वड़ोदरा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry Of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhavan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel.: 011-23604740
Website: www.esic.gov.in

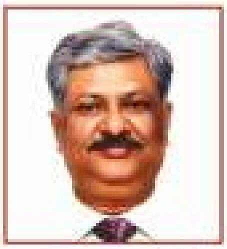

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संख्याः ए-49-17/1/2016-रा.भा.
दिनांक: 10/01/2024

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "राजभाषा विश्वामित्री" का शुभारंभ प्रशंसनीय है। आजादी के पहले से ही हिंदी के राष्ट्रीय प्रसार में गुजरात की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वड़ोदरा शुरु से ही एक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। मुझे गुजरात तैनाती के समय वड़ोदरा के इस पहलू को नज़दीक से देखने-समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यहाँ के मनीषियों के साहित्य और सम्भाषण ने हिंदी के लिए संजीवनी का कार्य किया है। यह प्रवेशांक कार्यालयीन कामकाज में उप क्षेत्रीय कार्यालय व क.रा.बी. योजना से जुड़े सभी कार्मिको के लिए प्रेरणादायक और सहायक हो और वैचारिक एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए अच्छा मंच प्रदान करे, ऐसी कामना है।

पत्रिका के प्रवेशांक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

रत्नेश कुमार गौतम

रत्नेश कुमार गौतम

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय वड़ोदरा
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
वड़ोदरा, गुजरात - 390 007

बीमा आयुक्त कार्यालय (पश्चिम क्षेत्र)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व गोवा)
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
चौथी मंजिल, पंचदीप भवन, आश्रम रोड,
अहमदाबाद-380014 (गुजरात)

क.रा.बी.नि.
ESIC

Office of the Insurance Commissioner (West Zone)
Employee's State Insurance Corporation
(Gujarat, Rajasthan, Maharashtra, MP & Goa)
(Minisrty of Labour & Employment, Govt. of India)
4th Floor, Panchdeep Bhavan, Ashram Road,
Ahmedabad-380014 (Gujarat)
E-mail: ic-westzone@esic.gov.in
Phone-079-27540233

रामजी लाल मीना
बीमा आयुक्त

अ. शा. पत्र सं.: IC-WZ/17/2/2023
दिनांक: 26/10/2023

संदेश

प्रिय श्री रावत,

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा नीति के अनुपालन एवं भारतीय भाषाओं के लिए संवर्धन के प्रगतिशील प्रयासों के तहत उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विविधता में एकता का संचार करने की विशेषता रखने वाली भाषा हिंदी अद्वितीय स्थान रखती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं में सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी, देश में 90% से अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। भाषा व्यक्ति को नहीं बल्कि समाज को भी जोड़ती है। अपनी सरलता, सहजता, शाब्दिक उदारता और साहित्यक समृद्धि के कारण हिंदी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अपनी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पल्लवित हो रही है। यह **"वसुधैव कुटुम्बकम"** के सिद्धांत का संदेश देती है, जिससे विश्व पटल पर हिंदी ने अपनी विशेष पहचान बनाई है। मैं, इस पुनीत प्रकाशन के लिए लेखकों एवं पाठकों सहित सम्पादन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

भवन्निष्ठ,
रामजी लाल मीना

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
वड़ोदरा

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, आश्रम रोड,
अहमदाबाद-380014 (गुजरात)

क.रा.बी.नि.
ESIC
Regional Office
Employee's State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
"Panchdeep Bhavan", Ashram Road,
Ahmedabad-380014 (Gujarat)
E-mail: rd-gujarat@esic.gov.in
Phone-079-27582400/450

हेमंत पाण्डेय
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)

अ.शा. पत्र संख्या: 37.ए.49.17.4.2011-रा.भा.
दिनांक: 07/11/2023

संदेश

प्रिय श्री रावत जी,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय पत्रिकाएँ निरंतर संवाद का एक ऐसा मंच तैयार करती हैं जो कार्मिकों के लिए उन्हें कार्यालयीन परिवेश में अपनी रचनात्मक, कलात्मक एवं दार्शनिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अवसर प्रदान कर सके।

"भाषा किसी राष्ट्र की आत्मा होती है।" किसी देश की संस्कृति उसकी भाषा के आइने से ही पहचानी जा सकती है। भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं का उत्थान संभव है। इसी प्रकार किसी प्रतिभा को मुखर होने के लिए भाषा उसे सेतु का रूप सुलभ कराती है। हिंदी विश्व की एक प्राचीन समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। पत्रिका के माध्यम से भाषा के विकासशील आयामों के साथ-साथ कार्यालयीन गतिविधियों को भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि **"राजभाषा विश्वामित्री"** का प्रथम अंक राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति कार्यालय की प्रतिबद्धता को आगे बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैं, इसके प्रकाशन से जुड़े कार्यालय के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

भवन्निष्ठ,

हेमंत पाण्डेय

श्री विमल रावत
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
वड़ोदरा, गुजरात - 390 007

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा हिंदी की गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** का प्रथम अंक गर्व के साथ प्रकाशित करने जा रहा है। राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत हम राजभाषा हिंदी एवं संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति अग्रसर हैं। हिंदी की महत्ता राष्ट्रीय एकता में है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सामजिक सुरक्षा के क्षेत्र में इसका उपयोग करते हुए राजभाषा का प्रचार एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध हैं। अपने राजभाषा कार्यान्वयन के कर्तव्य विश्वामित्री नदी जो वड़ोदरा शहर की संचियनी है जिससे प्रेरणा लेते हुए हिंदी की गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** का प्रकाशन इस संकल्प के साथ किया जा रहा है कि इसका प्रवाह निरंतर रचानाकर्ताओं एवं पाठकों को मिलता रहेगा। हिंदी की गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** अपनी रचनात्मक क्षमता प्रदर्शित करने के लिए निगम के कार्मिकों के लिए एक सशक्त मंच है जो पाठकों को भी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रेरित करेगा।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, इस विश्वास एवं आशा के साथ उक्त पत्रिका आप सभी की अपेक्षाओं के अनुरुप हो। मैं उक्त पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

(श्री विमल रावत)
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक की कलम से

हमें आप सभी को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा की हिंदी गृह पत्रिका **"राजभाषा विश्वामित्री"** का प्रथम अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। हमारी राजभाषा हिंदी बहुत ही सुदृढ़ तरीके से सभी देशवासियों को मजबूती से जोड़े हुए हैं और सभी वर्गों को बांधे हुए है। किसी भी कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका अपने सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को अपनी बात, अपने विचार और अपने सुझाव के द्वारा एक दुसरे को एक अटूट बंधन में बांधती हैं।

जब मैंने इस कार्यालय में कार्यभार ग्रहण के उपरांत मुझे पता चला कि पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से यह कार्यालय चल रहा हैं परन्तु हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन अभी तक नहीं हो पाया हैं। उसी दिन मैंने वर्ष 2023-24 की हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन का दृढ़ निश्चय कर लिया था। प्रत्येक कार्यालय को अपनी एक हिंदी की गृह पत्रिका प्रकाशित करनी चाहिए क्योंकि यह अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने विचार और अपनी भावनाएं आदान-प्रदान करने का एक सुअवसर प्रदान करती हैं और सभी को उसमें सहभागिता करके अपना योगदान देना चाहिए।

हमारी इस हिंदी की गृह पत्रिका के प्रकाशन में जिन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया हैं और अपनी अच्छी रचनाएँ देकर इसके प्रकाशन को सफल बनाया हैं, इसके लिए मैं सभी को दिल की गहराई से बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ और भविष्य में इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करता हूँ। उक्त हिंदी की गृह पत्रिका के लिए हमारे आदरणीय महानिदेशक महोदय, बीमा आयुक्त (राजभाषा) महोदय, बीमा आयुक्त (पश्चिम अंचल) महोदय एवं क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी) महोदय, सभी सम्मानित अधिकारियों को उनके शुभ संदेश प्रेषित करने के लिए दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। आपके शुभ संदेशों/प्रतिक्रियाओं को पाकर हम अधिक उत्साह से हिंदी की गृह पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रोत्साहित होते हैं। इसलिए आप सभी के प्रेरणा देने वाले संदेशों की प्रतीक्षा में ....

(महादेव मीना)
उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती (16 फरवरी 1824 - 30 अक्टूबर 1883)

वर्ष 2023 में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती के उपलक्ष्य में अहमदाबाद मे ज्ञानज्योति पर्व मनाया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज में वैचारिक क्रांति से समाज सुधार के क्षेत्र में निरंतर कार्य किये। गुजरात क्षेत्र के साथ देशभर में विशेषकर उत्तर भारत में उन्होनें समाज कल्याण एवं समाज सुधार के ध्येय के साथ, अनेक संगठनो और पुस्तकों के माध्यम से देश में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञानता तथा अंधविश्वास के विरूद्ध समाज को जागृत करने के लिए वैचारिक क्रांति से श्रेष्ठ कार्य किया था। इन्होनें वेदो के ज्ञान से दुनिया को परिचित कराया। उन्होने देश की प्राचीन संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए विभिन्न गुरुकुल स्थापित कर समाज को कई विद्वान दिए। उन्होंने महिला शिक्षा, छुआछूत, व्यसन आदि कुरूतियों के विरूद्ध समाज को जागृत करने का निरतंर कार्य किया। सरस्वती आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। उनके बचपन का नाम मूलशंकर तिवारी था। उन्होंने वेदों के प्रचार के लिए मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। "वेदों की ओर लौटो" यह उनका ही प्रमुख नारा था। उन्होने कर्म सिद्धान्त, पुर्नजन्म तथा सन्यास को अपने दर्शन का स्तम्भ बनाया। उन्होनें ही सबसे पहले 1876 में स्वराज्य का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढाया। प्रथम जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्य समाजों को यह निर्देश भिजवाया कि सभी सदस्य अपना धर्म सनातन धर्म लिखवाएँ।

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी को टंकारा में सन् 1824 में मोरबी रियासत के पास काठियावाड़ क्षेत्र, जिला राजकोट, गुजरात में हुआ था। इनके पिता का नाम कृष्ण लालजी तिवारी और माँ का नाम अमृता बाई / अम्बा बाई था। उनके पिता एक कर-कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण कुल के समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इनका जन्म धन राशि और मूल नक्षत्र में होने से स्वामी दयानंद सरस्वती का बाल्यावस्था में नाम मूलशंकर तिवारी रखा गया। उनका प्रारंभिक जीवन बहुत आराम से बीता। दयानंद सरस्वती की माता वैष्णव थीं जबकि उनके पिता शैव मत के अनुयायी थे। आगे चलकर विद्वान बनने के लिए वे संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए। शिव के पक्के भक्त बालक मूलशंकर को उनके पिता ने महाशिवरात्रि के अवसर पर व्रत रखने के लिए कहा। शिव मंदिर में रात्रि में बालक ने चूहों को शिव लिंग पर उत्पात मचाते देखा तो उन्हे बोध हुआ कि यह वह शंकर नहीं है जिसकी कथा उसे सुनाई गई थी, इस के बाद मूलशंकर मंदिर से चला गया और उसके मन में शिव के प्रति जिज्ञासा उठी। अपनी छोटी बहन और चाचा की हैजा के कारण हुई मृत्यु से वे जीवन मरण के अर्थ पर गहराई से सोचने लगे और ऐसे प्रश्न करने लगे जिससे उनके माता पिता चिन्तित रहने लगे। तब उनके माता पिता ने उनका विवाह किशोरावस्था के प्रारंभ में करने का निर्णय किया। यह एक आम प्रथा थी, लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और वे 1846 में सत्य की खोज में निकल पड़े।

<u>ज्ञान की खोज</u>:- 1825 में शिवरात्रि के दिन उनके जीवन में नया मोड़ आया। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए वह गुरु स्वामी विरजानंद के पास पहुँचे। गुरूवर ने उन्हे पाणिनी, व्याकरण, पतंजली - योगसूत्र तथा वेद-वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा-विद्या को सफल कर दिखाओं, परोपकार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओं, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करों, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करों। यही तुम्हारी गुरू दक्षिणा हैं। उन्होनें अंतिम शिक्षा दी कि मनुष्यकृत ग्रंथो में ईश्वर और ऋषियों की निंदा है, ऋषिकृत ग्रथों में नहीं। ज्ञान प्राप्ति के बादः महर्षि दयानंद सरस्वती ने अनेक स्थानों की यात्रा की। उन्होनें हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराया। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकत्ता में बाबू केशवचंद्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के संपर्क में आए। यहीं से उन्होनें पूरे वस्त्र पहनना तथा हिन्दी में बोलना तथा लिखना प्रारंभ किया। यही उन्होनें तात्कालिक वायसराय को कहा था, कि मेरा मानना है कि विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का व्यवहार पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

<u>आर्य समाज की स्थापना</u>: महर्षि दयानंद सरस्वती ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1832 को गिरगाँव मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के नियम और सिद्धांत प्राणमात्र के कल्याण के लिए है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

<u>वैचारिक आंदोलन, शास्त्रार्थ एवं व्याख्यान</u>: वेदों को छोड़कर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है:- इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना प्रारंभ किया और जहाँ जहाँ वे गए प्राचीन परंपरा के पंडित और विद्वान उनसे हार मानते गए। संस्कृत भाषा का उन्हें बहुत ज्ञान था। संस्कृत में वे धाराप्रवाह बोलते थें। साथ ही वे प्रचंड तार्किक थे।

उन्होने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रंथो का भली-भांति अध्ययन-मंथन किया था। अतएव अपने चेलों के संग मिल कर उन्होंने तीन तीन मोर्चो पर संघर्ष आरंभ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाई तथा इस्लाम के थे किंतु तीसरा मोर्चा सनातनधर्मी हिंदुओं का था। दयानंद ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था।

महर्षि दयानंद का समाज सुधार में व्यापक योगदान रहा। इन्होनें तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियाँ तथा अंधविश्वासों और रूढियों-बुराईयों व पाखण्डों का खण्डन व विरोध किया। उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में समाज को आध्यात्म और आस्तिकता से परिचित कराया। वे योगी थे तथा प्राणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णो तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे। उनमें देशभक्ति की भावना दिखाई देती थी, यही नहीं वह तो 1857 मे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले अग्रिम लोगों में भी शामिल थे।

इनके द्वारा निम्न सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया गया:- जातिबाद, छुआछुत, बाल विवाह, बहुविवाह, सती प्रथा, मृतक श्राद्ध, पशु बलि, नर बलि, पर्दा प्रथा, देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति, शवों को दफनाना या नदि में बहाना, मृत बच्चों को दफनाना, समुद्र यात्रा का निषेध का खंडन।

इनके द्वारा निम्न सामाजिक सुधार के कार्य किये गये:- गुण कर्म-स्वभाव-आध्यात्मिक वर्ण व्यवस्था का समर्थन, शुद्धि आंदोलन, दलितोद्धार, विधवा विवाह, अंतरजातीय विवाह, सर्व शिक्षा अभियान, नारी सशक्तिकरण, नारी को शिक्षा का अधिकार, सबको वेद पढ़ने का अधिकार, गुरुकुल शिक्षा, प्रथम हिंदु अनाथालय की स्थापना, प्रथम गौशाला की स्थापना, स्वदेशी आंदोलन, हिंदी भाषा का समर्थन।

हत्या का षड्यंत्र: 1863 में गुरू विरजानंद के पास अध्ययन पूर्ण होने के बाद लगभग बीस वर्षो के कार्यकाल में दयानंद सरस्वती की हत्या व अपमान के लगभग 44 प्रयास हुए। जिसमें से 17 बार विभिन्न माध्यमों से विष देकर प्राण हरण के प्रयास हुए।

अंतिम प्रयास: स्वामी जी की मृत्यु जिन परिस्थितियों में हुई, उससे भी यही पता चलता है कि उसमें निश्चित ही अंग्रेजी सरकार का कोई षडयंत्र था। स्वामी जी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन संध्या के समय हुई थी। उन दिनों वे जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह के निमंत्रण पर जोधपुर गये हुए थे। यहाँ उनके नित्य ही प्रवचन होते थे। यदा कदा महाराज जसवंत सिंह भी इनके चरणों में बैठ कर वहाँ उनके प्रवचन सुनते। दो चार बार स्वामी जी भी राज्य महलों मे गए। वहाँ उन्होनें नन्हीं नामक वैश्या का अनावश्यक हस्तक्षेप और महाराज जसवंत सिंह पर उनका अत्यधिक प्रभाव देखा। स्वामी जी को यह बहुत बुरा लगा। उन्होंने महाराज को इस बारे में समझाया तो उन्होंने विनम्रता से उनकी बात स्वीकार कर ली और नन्हीं से संबंध तोड़ लिए। इस से नन्हीं स्वामी जी के बहुत विरूद्ध हो गई। उसने स्वामी जी के रसोइए कालिया उर्फ जगन्नाथ को अपनी तरफ मिला कर उनके दूध में पिसा हुआ कांच डलवा दिया। थोड़ी ही देर बाद स्वामी जी के पास आकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया और उसके लिए क्षमा माँगी। उदार ह्रदय स्वामी जी ने उसे रहने का खर्च और जीवन यापन के लिए पाँच सौ रूपये देकर वहाँ से विदा कर दिया ताकि पुलिस उसे परेशान न करें। बाद में जब स्वामी जी को जोधपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया तो वहाँ संबंधित चिकित्सक भी शक के दायरे में रहा। उस पर आरोप था कि वह औषधि के नाम पर स्वामी जी को हल्का विष पिलाता रहा। बाद में जब स्वामी जी की तबियत बहुत खराब होने लगी तो उन्हे अजमेर के अस्पताल में लाया गया। मगर तब तक काफी विलंब हो चुका था। स्वामी जी को बचाया नहीं जा सका। इस संपूर्ण घटनाक्रम मे आशंका यही है कि वैश्या को उकसाने तथा चिकित्सक को भड़काने का कार्य अंग्रेजी सरकार के इशारे पर किसी अंग्रेज अधिकारी ने ही किया। अन्यथा एक साधारण वैश्या के लिए यह संभव नहीं था कि केवल अपने बलबूते पर स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे सुप्रसिद्ध और लोकप्रिय व्यक्ति के विरूद्ध ऐसा षड्यंत्र कर सकें। बिना किसी प्रोत्साहन और संरक्षण के चिकित्सक भी ऐसा दुस्साहस नहीं कर सकता था।

अंतिम शब्द: महर्षि की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर में हुई थी। स्वधर्म, स्वभाव, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति और स्वदेशोन्नति के अग्रदूत स्वामी दयानंद जी का शरीर सन् 1883 में दीपावली के दिन पंचतत्व में विलीन हो गया और वे अपने पीछे छोड़ गए एक सिद्धान्त कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - अर्थात सारे संसार को श्रेष्ठ मानव बनाओ। **उनके अंतिम शब्द थे - प्रभु! तूने अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।**

महादेव मीना
उप निदेशक

भारत-चन्द्रयान-3

हमारे भारत वर्ष के लिए 23 अगस्त 2023 का दिन एक ऐतिहासिक दिन बन गया, क्योंकि हमने महान उपलब्धि हासिल की है, जो अब तक हम से पहले केवल तीन देश अमेरिका, रूस और चीन ने ही प्राप्त की है, भारत अब चौथा देश बन गया है।

चन्द्रयान-3 को इसरो के द्वारा अपने अंतरिक्ष केन्द्र श्री हरिकोटा सतीश धवन अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र से प्रक्षेपण किया गया। यह 14 जुलाई 2023 को भारतीय समय के अनुसार 02:36 (दोपहर) को छोड़ा गया था। यह प्रक्षेपण यान भारतीय वैज्ञानिको के अनुसार चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव की सतह पर 23 अगस्त को सायं 06: 04 बजे सॉफ्ट लैंडिग हुई और सफलता पूर्वक उतरने वाला भारत दुनिया का चौथा देश बन गया। जिस स्थान पर हमारा यान लैंडर विक्रम उतरा उस जगह को अब "शिव शक्ति" बिंदु के नाम से जाना जाएगा।

हमारे वैज्ञानिको ने बताया कि 26 kg. वजन की रोवर प्रज्ञान के पहियों में भारत का राष्ट्रीय चिन्ह "अशोक स्तंभ" और इसरो का लोगो के चिन्ह उभरे हुए है तथा चाँद पर चहल कदमी से चाँद की सतह पर यह दोनो चन्द्रमा की धरती पर भारत के निशान छप गए है। चन्द्रमा की सतह पर रोवर प्रज्ञान की गति 1 cm प्रति सेकेंड की रही।

चाँद पर एक दिन पृथ्वी के 14 दिनों के बराबर होता है और लगभग इतनी ही बड़ी रातें होती है। दक्षिणी ध्रुव पर रात का तापमान -238°C तक गिर जाता है और दिन के तापमान +100° - +150°C तक रहता है। यह तापमान लैंडर विक्रम बर्दाश्त कर पाएगा या नही यह अभी कह नही सकते है।

चन्द्रमा पर उतरने के बाद "प्रज्ञान" रोवर ने लैंडर विक्रम का पहला फोटो लिया है और वह अपने अनुसंधान में लग गया है। इसी ने चन्द्रमा पर सल्फर, ऑक्सीजन और अन्य खनिजों की पुष्टि की है। लैंडर विक्रम में लगे "चेस्ट" ने चन्द्रमा के तापमान से जुड़ी जानकारी भेजी है कि दक्षिणी ध्रुव पर सतह का तापमान 50°C है।

चन्द्रमा पर उतरने के बाद "प्रज्ञान" रोवर चन्द्रमा की सतह पर 14 दिन तक घूम-घूम कर आंकड़े एकत्रित करेगा। इसमें लगे दो उपकरणों में से एक अल्फा पार्टीकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर चन्द्रमा की सतह का रासायनिक विश्लेषण करेगा जबकि दूसरा लेजर इंडयुस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप सतह पर धातु की खोज करेगा। ये उपकरण अपना काम करेंगे, आंकड़े रोवर से सीधे लैंडर विक्रम और फिर प्रणोदन मॉड्यूल के पास पहुँचेंगे। ये दोनो इंडियन डीप स्पेस नेटवर्क से जुडे रहेंगे। कर्नाटक स्थित प्रयोगशाला में आंकड़ों का वैज्ञानिक विश्लेषण करेंगे।

हमारे भारत देश की यह महान उपलब्धि इसरो के अध्यक्ष श्री सोमनाथ के नेतृत्व में हासिल की। चन्द्रमा की सतह पर चन्द्रयान-3 की इस सोफ्ट लैंडिंग के दिन 23 अगस्त को अब प्रत्येक वर्ष "राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस" के रुप में मनाया जाएगा।

रोहन कुमार मीना
पुत्र श्री महादेव मीना
उप निदेशक

(अ) हमारे इस मिशन का उद्देश्य था चन्द्रमां पर सॉफ्ट लैंडिंग करना और रोवर को चांद की सतह पर चलाना। हम इसे 0.5 मीटर प्रति सेकेंड से चन्द्रमा की सतह पर उतारने में कामयाब रहे।

(ब) इस मिशन के निदेशक मोटमरी श्रीकांत है।

बोधिसत्व

मानने से जानने की ओर जाना है,
तभी सुकरात की संभावना हैं !
यायावर बनने का हौसला अगर है,
तभी सांकृत्यायन की संभावना हैं !
बिना योग्य हुए कुछ अगर पाना है,
तभी त्रिशंकु की संभावना हैं !
विरह में छुपे प्रेम को समझना है,
तभी वृन्दावन की संभावना हैं !
आज अर्जुन में अगर जिज्ञासा है,
तभी कृष्ण की संभावना हैं !
पुरुषार्थ की मर्यादा को अपनाना है,
तभी रामायण की संभावना हैं!
सिद्धार्थ के होने को जानना है,
तभी बुद्ध की संभावना हैं !
इन संभावना के प्रति यदि हम सजग हैं,
तभी हम में बोधिसत्व की संभावना हैं !

मुकुल वत्स
उप निदेशक

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

-मैथिलीशरण गुप्त

कर्मचारी राज्य बीमा निगम - सूचना प्रौद्योगिकी से पूर्व एवं वर्तमान में

मेरी नियुक्ति इस विभाग में 02 सितंबर, 2003 को अवर श्रेणी लिपिक के रूप में हुई थी। आज मैं अपने बीस साल के अनुभव को विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित आप सभी के साथ साझा कर रहा हूँ। सबसे पहले मैं पूर्व की स्थिति को बयां कर रहा हूँ चूंकि मेरी नियुक्ति शाखा कार्यालय, जामनगर (क्षेत्रीय कार्यालय, गुजरात) में हुई थी और कार्यालय के प्रथम दिन मुझे अजीब सी बेचैनी थी। अतः मैं प्रातः नौ बजे ही कार्यालय पहुँच गया था, कार्यालय के सामने करीब सौ से ज्यादा लोग पहले से ही खड़े थे, थोड़ा अजीब लगा कि कैसा कार्यालय है? कार्यालय करीब सुबह 09.00 बजे खुला, स्टाफ के सभी लोगो से परिचय हुआ एवं पहले ही दिन मुझे दावा (क्लेम) बनाने के लिए संबंधित जगह पर बैठने के लिए कहा गया। मुझे शाम तक यह पता चल गया कि यह भुगतान एक पेंशन है जो कुछ बीमित व्यक्तियों/आश्रितों को हर महीने प्रदान जाती है। बाद में यह भी पता चला कि पेंशन बनाने की प्रक्रिया महीने के पूरे होने से पहले ही शुरू की जाती है ताकि महीने की पहली तारीख को बीमित व्यक्तियों/आश्रितों को पेंशन प्रदान की जा सके।

इसके अलावा और भी भुगतान जैसे कि बीमारी हितलाभ, विस्तारित **बीमारी हितलाभ, अस्थायी अपंगता हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, अंत्येष्टि खर्च हितलाभ** एवं **कुछ अन्य हितलाभ** के लाभार्थी भी कार्यालय में आते थे। चूंकि उस समय में नकद भुगतान की व्यवस्था थी, अतः कार्यालय में सुबह से शाम तक काफी भीड़ हुआ करती थी। इसके अलावा अंशदान के वापिस आने की विवरणी जो वर्ष में दो बार जमा करवाई जाती थी उसके लिए भी अलग से पटल (काउंटर) हुआ करते थे। वो कार्य काफी जटिल था एवं सभी दवाखानो में इसके आधार पर लाइव लिस्ट भेजी जाती थी। इन प्रसंगो की प्रासंगकिता यह है कि शाखा कार्यालय का सभी कार्य मैन्युअल हुआ करता था, जिसमे काफी कागज, मैनपावर एवं समय लगता था एवं गलती की भी गुंजाइश रहती थी। इसके अलावा बीमाकृत व्यक्ति/महिलाओं का पंजीकरण भी मैन्युअल होता था जिसमें देरी की भी बहुत ज्यादा शिकायतें होती थी जिसे नकारा नहीं जा सकता था। इसके साथ एक बहुत बड़ी समस्या बढ़ती जा रही थी वो यह थी कि कार्यालय की लगभग दो तिहाई जगह इन रिकॉर्ड्स/अभिलेखों ने घेर लिया था। कुल मिलाकर स्थिति ये थी कि स्टाफ के लोग काम करते थे तथापि बीमित व्यक्तियों में संतोष का अभाव था। कार्यालयों में लंबित मामलों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी एवं नियोजको में भी ई.एस.आई. सेवाओं के प्रति रोष था।

इन समस्याओ के बीच 2009 के आसपास कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय ने अपने सभी कार्यालयों, अस्पतालों एवं दवाखानो के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ किया जिसे **"प्रोजेक्ट पंचदीप"** के नाम से जाना गया जिसने सच्चे अर्थों में हमारी सेवाओं को काफी बेहतर बनाया। आज नियोक्ताओं को नए पंजीकरण के लिए शाखा कार्यालयों में आना नहीं पड़ता है, वे अपने प्रतिष्ठानों से ही पंजीकरण कर सकते है। रिटर्न्स फाइल्स करने का भी ऑनलाइन हो जाने से समय की काफी बचत हो रही है एवं निगम के कार्मिक ऑनलाइन माध्यम से जल्दी बीमाकृत का भुगतान कर पा रहे है। बैच प्रोसेस के माध्यम से बल्क में क्षेत्रीय कार्यालयों/उप क्षेत्रीय कार्यालयों से आश्रित हितलाभ एवं स्थायी अपंगता का भुगतान समय से हो रहा है एवं जिससे भुगतान में पारदर्शिता का भी समावेश हुआ हैं। लाइव लिस्ट जो पूर्व में दवाखानो में मैन्युअल भेजी जाती थी वो भी ऑनलाइन सिस्टम में भी एक क्लिक पर उपलब्ध है।

कुल मिलाकर के हमारे बीमित व्यक्ति संबंधी मुद्दे शत प्रतिशत ऑनलाइन हो चुके है जिससे बीमित व्यक्तियों में संतोष बढ़ रहा है। अगर नियोजक की बात करे तो उन्हें अंशदान भुगतान करने के लिए भी ऑनलाइन प्रणाली एक सुगम माध्यम साबित हो रही है। पहले नियोजकों को बैंक में काफी चक्कर लगाने पड़ते थे एवं चार प्रति में चालान तैयार करना पड़ता था जिसमें न सिर्फ गलती की गुंजाइश रहती थी अपितु प्रायः चालानों की प्रति खोने की शिकायतें भी प्राप्त होती थी। रिटर्न्स फाइल करने की पूर्व व्यवस्था में शाखा कार्यालयों में जाना पड़ता था एवं शाखा कार्यालयों को रिटर्न्स के आधार पर लाइव लिस्ट बना के सभी दवाखानो में भेजना पड़ता था। ऑनलाइन सिस्टम से अब ये सभी चीजे बहुत ही सरल और सहज हो गयी है एवं काफी समय की बचत हो रही है एवं गलती की संभावना न्यूनतम हो चुकी है। कुल मिलाकर के सूचना तकनीकी के आगमन से न केवल नियोजकों एवं बीमाकृत को निगम द्वारा प्रदत्त सेवाओं का लाभ उठाने में कम से कम समय लग रहा है बल्कि निगम अपने कर्मचारियों एवं अधिकारियों को उनके व्यक्तिगत दावों को ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा प्रदान कर रहा है। इससे कागजों की खपत में काफी कमी हुई है एवं फाइलों का आदान प्रदान काफी कम हो चुका है।

निगम की सभी रिपोर्ट्स ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त हो रही है जिससे सही एवं सटीक आंकड़े प्राप्त हो रहे है। हाल ही में निगम ने अपने सभी स्तर के कार्यालयों में ई-ऑफिस से कार्य को सफलतापूर्वक लागू किया है जिससे हर कार्यालय में फाइलों की संख्या में काफी कमी आ गयी है एवं कार्यालय पहले से ज्यादा सुंदर दिख रहे है। इससे कर्मचारियों की कार्य निष्पादन क्षमता में काफी इजाफा देखा जा रहा है। पुरानी फाइलों को स्कैन करके भविष्य की जरूरतों के हिसाब से रिकॉर्ड रूम में रखा जा रहा है या छंटाई किया जा रहा है। निगम में सूचना तकनीकी के प्रादुर्भाव से एवं ई-ऑफिस के आगमन से न केवल लाभार्थियो में संतोष की भावना आई है, बल्कि अपने कर्मचारियों में भी गर्व की भावना का संचार हुआ है।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल"।
-भारतेन्दु हरिश्चंद्र-

जय हिंद ।

जय भारत ।

कुमार कुंजन
सहायक निदेशक

रोनित राज
पुत्र श्री कुमार कुंजन
सहायक निदेशक

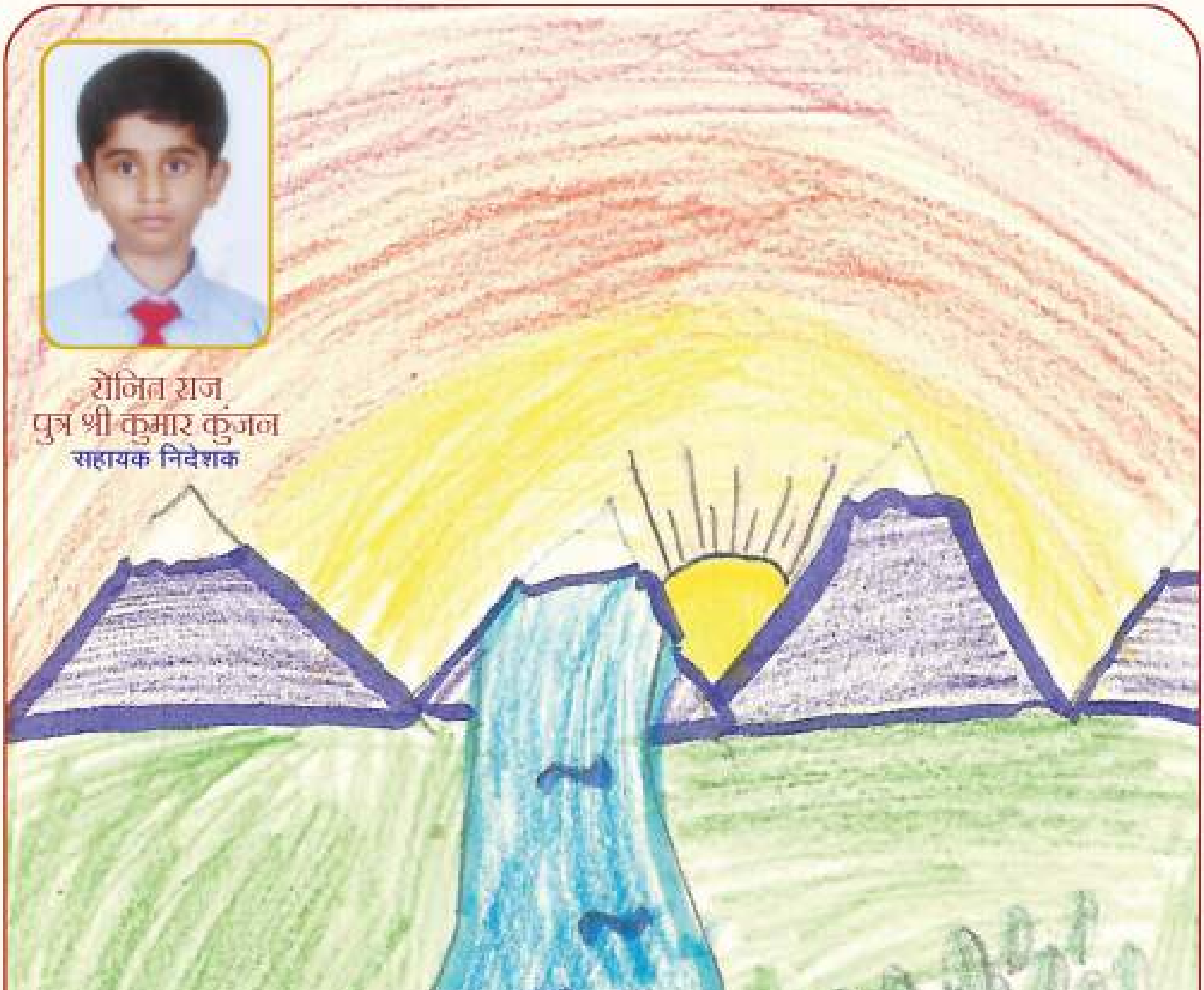

इजरायल हमास युद्ध

ये कैसी आग लगी है इजरायल,
कैसा भयानक हमास का मंजर है,
जहाँ खेल रहे होते बच्चे,
गुंज रही होती किलकारियां,
वहाँ दूर दूर तक धुआँ धुआँ और तबाही है,
ना सुन रहा कोई किसी की सिसकी,
सबने जैसे पी रखी है बदले की व्हिस्की... बदले की व्हिस्की।

और कोई बड़ी बात नही मुझमें,
बात सिर्फ इतनी है की जो दिल में है वही जुबाँ पर आती है,
और कोई खास बात नही मुझमें,
बात इतनी ही है कि,
खा कर भी खंजर पीठ पर,
फितरत ऐसी है कि यार के दुख का मंजर नही देखा जाता,
कुछ बेगाने लोग ऐसे मिले है जिंदगी में,
कि अपनो से भी ज्यादा अपने हो गए है,
और कुछ अपने ऐसे गए हैं जिंदगी से कि बेगानो से भी ज्यादा बेगाने हो गए हैं।

दिलीप कुमार झा
सहायक निदेशक

अनसुनी

कुछ खामोशियां अनसुनी नहीं की जाती
और कहीं एक आवाज गूंजती रहती है,
पर दुनिया उसको तवज्जो नहीं देती
दिन ढलने की भनक तक नहीं लगती,
और रात नम आंखों में ही बीत जाती।

ऐसे गुमसुम होके जीना अब आदत सी लगती
यह जिंदगी कट रही... और इसकी डोर भी नहीं मिलती,
कुछ अधूरी बातें पूरी बात सुलझा देती
और कहीं उन पन्नों पर लिखें,
अल्फाजों की अहमियत ढ़लती जाती।

वह कागज पर उतरे स्याही सिर्फ उन्हीं में सिमट गए
किसी के आंखों में झिलमिल्लाई और कहीं ओझल से हो गए,
मंजिलों के पार एक लम्हा ठहर सा गया
उसकी परछाईं में कभी रास्ता न मिल सका,
एक दिन की आस लगाते, रात दस्तक देने लगा।

दहलीजों पर अकेले खुद को पाकर
उस पार का फैसला तय ना हो सका,
ख्वाहिशों में भी खामियां ढूंढने लगे
परिंदों के पंख काट, उससे आसमान की खैरियत पूछने लगे।

जालिम दौर है और तुम यह न समझ सके
गुस्ताखियां दोहराते दोहराते कब... खुद मुजरिम बन गए।

बी इप्सिता
पुत्री श्री पी. के. बारिक, सहायक निदेशक

यज्ञसेनी

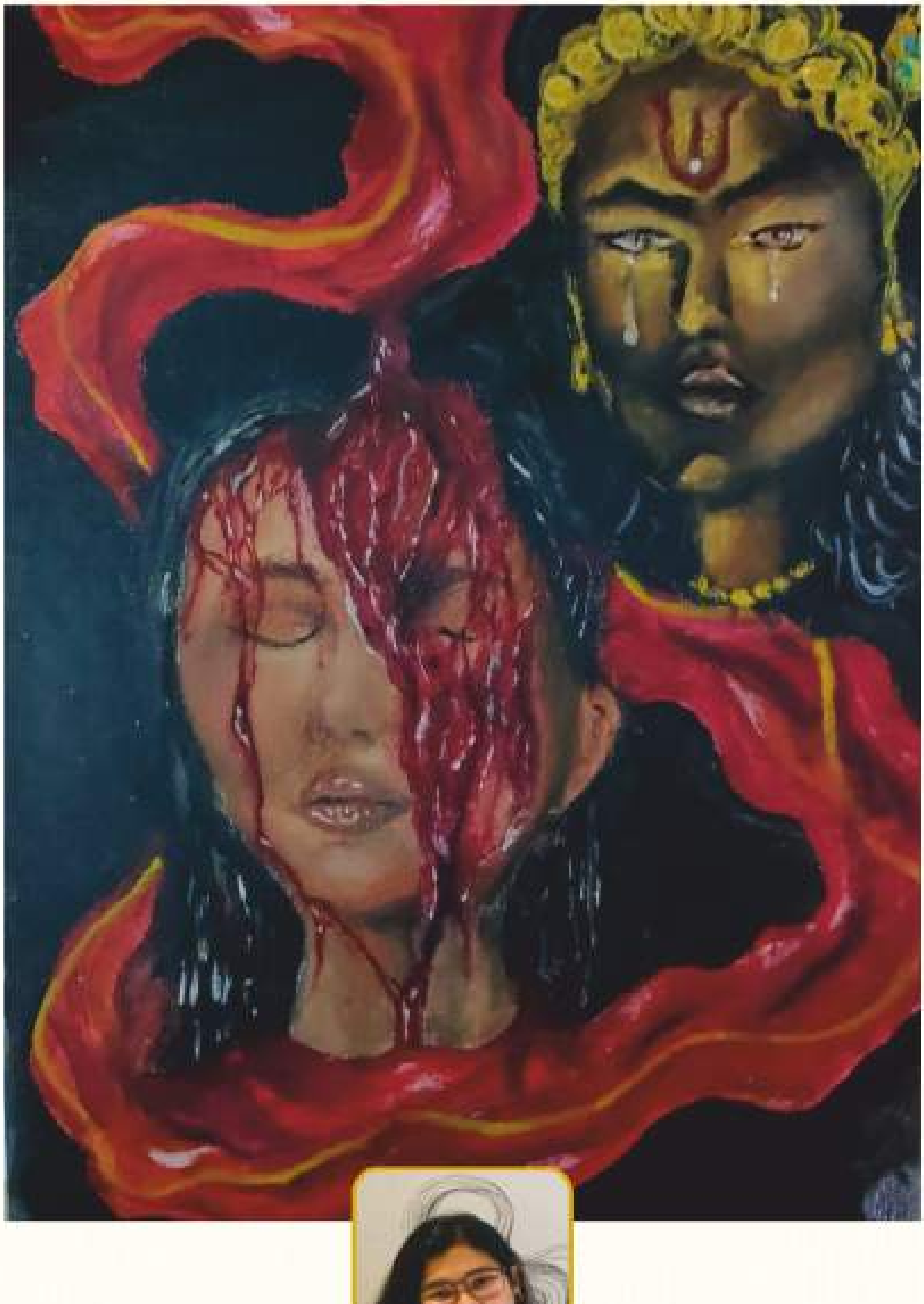

बी इप्सिता
पुत्री श्री पी. के. बारिक, सहायक निदेशक

हिन्दी की रक्षा करना हमारा विवक्षित दायित्व है

भारत देश को आजाद हुए काफी वर्ष हो चुके है परंतु विडंबना है इस देश की हमारी हिंदी का संरक्षक कौन है, कौन इसे सच्चे दिल से प्यार करता है, कौन इसे सच्चे दिल से सम्मान देता है? कड़वी सच्चाई तो यह है कि हिंदी मौन है तथा अंग्रेजी ने उसकी जगह अपना स्थान बना लिया है। आज कोई भी व्यक्ति इस बात की गहराई में नहीं जा रहा है कि हमारी हिन्दी अपना अस्तित्व खोती जा रही है। अंग्रेजी आज का फैशन बन चुकी है। सीधी बात तो यह है कि इसके लिए जिम्मेदार ही हम है क्योंकि हम हिंदी को छोड़ अंग्रेजी का दामन थाम रहें है। हाँलाकि किसी भी मामले में यह अंग्रेजी से कम नहीं है। हमें अपनी भाषा पर गर्व करने के साथ उसे अधिकाधिक उपयोग में लाना होगा। किसी व्यक्ति विशेष के भरोसे इस कार्य को छोड़ने का नतीजा हम देख रहे है। हिंदी समाज को अपनी सार्थक भूमिका निभानी होगी। हिंदी को बढ़ावा देना है तो लोगों को हिंदी की ओर मोड़ना ही होगा। प्रबुद्ध पाठको के विचारोत्तेजक व हिंदी के सम्मान लिए किए जा रहे प्रयासों हमे समझना होगा। कई प्रबुद्ध पाठक तो यहाँ तक कहते है कि हमारी सभ्यता तो आज अंग्रेजी के पास गिरवी होती जा रही है तथा हम अंग्रेजी के मोह में फँसते जा रहे है। यदि समर्थवान तथा जिम्मेदार लोग इस हिंदी भाषा को प्रोत्साहन नहीं देगें तो हिंदी दिवस मनाने का क्या औचित्य रहता है या यह भी कहाँ जा सकता है कि केवल एक औपचारिकता रह जाती है। हिंदी संस्कारों की भाषा है। सरकार को इसका महत्त्व समझ कर पढ़ाई के दौरान ही बच्चों में निबंध लेखन, वाद विवाद प्रतियोगिता, कविता, पत्र लेखन के माध्यम से ज्ञान बढ़ाना होगा। यह अलग बात है कि समय के साथ साथ अन्य भाषाओं का भी उपयोग बढ़ा है, लेकिन यह भी शाश्वत है कि हिंदी का भारतीय परिवेश में कल भी महत्त्व था तथा आज भी है। विडम्बना है इस देश की कि हिंदी दिवस सिर्फ एक दिन की औपचारिकता बनकर ही रह गया है। स्कूलों मे अंग्रेजी ऐसे सिखा रहे है जैसे मातृभाषा है और हिंदी दूसरी भाषा। यदि नींव ही मजबूत नहीं होगी तो इमारत पक्की कैसे होगी। प्रबुद्धजनों ने हिंदी के साथ मिलकर बचाना होगा। पूर्व में भी प्राधिकृत सज्जनों द्वारा हिंदी भाषा के राष्ट्रीय महत्त्व को स्थापित करने का प्रयास किया गया। प्रबुद्धजनों ने बताया कि हिंदी का हमारे जीवन में कितना महत्त्व है। कई विद्वान तो यहाँ तक कहते है कि अक्षर नष्ट नहीं होता, उसमें कमी नहीं आती है, यही वाणी रथ का अक्ष कहलाता है अर्थात यह बताता है कि कितनी गहराई से हर बात को रखने का प्रयास किया गया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सरकार ने हिंदी को राजभाषा घोषित कर रखा है। घोषणा अलग चीज है और इस पर अमल करना अलग बात है। जब तक घोषणाओं को व्यवहार में लाने की कोशिश नहीं की जाती, तब तक किसी घोषणा का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। देश में अंग्रेजी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। हिंदी का विकास करना है तो हमें उदारता दिखानी होगी। हिंदी हमारी मातृभाषा है और भारत के अधिकांश इलाकों मे बोली जाती है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि शिक्षा के क्षेत्र से शुद्ध हिंदी गायब हो चुकी है। दसवीं तक हिंदी लागू है। जबकि हर कक्षा में अनिवार्य होनी चाहिए। हमें अपनी मातृभाषा कर पढ़ाई के दौरान ही बच्चों में निबंध लेखन, वाद विवाद प्रतियोगिता, कविता, पत्र लेखन के माध्यम से ज्ञान बढ़ाना होगा। यह अलग बात है कि समय के साथ अन्य भाषाओं का भी उपयोग बढ़ा हैं, लेकिन यह भी शाश्वत सत्य है कि हिंदी का भारतीय परिवेश में कल भी महत्व था तथा आज भी है। वास्तव में आज हिंदी भाषा का संरक्षक कहीं नजर नहीं आता है। हिंदी को हम ही पूरी तरह से नहीं अपना रहे है। बच्चों का झुकाव भी अंग्रेजी की ओर बढता रहा हैं, फिर हिंदी का बढ़ावा कहाँ से संभव होगा।

जब तक देश समर्थ व्यक्ति हिंदी को अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे तब तक हिंदी को उसका सम्मान मिलना आसान नहीं है। आजकल माता पिता भी बच्चों को फर्राटेदार अंग्रेजी में बात करते देखना चाहते है लेकिन हिंदी में समाए ज्ञान की उनको जानकारी है ही नहीं। हमें समझना होगा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं यह हमारी पहचान है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था कि हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की सभी साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती का कहना था - हिंदी के माध्यम से सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएंगे। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देकर इतिहास रचा था।

वीरेन्द्र सिंह पाल
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

हिन्दी का सम्मान

चिरकाल से रही है हिंदी भाषा जन मानस की,
भारत के उद्‌गार की और क्रांति के शंखनाद की।
इसी भाषा में इस देश में किलकारियाँ गूँजा करती है,
माँ अपने बच्चों को लोरी गाकर सुनाया करती है।
देशभक्तों ने इसी भाषा से स्वराज की अलख जगाई थी,
साहित्यकारों, कवियों ने जन मानस में जगह बनाई थी।
इसी भाषा ने गांधी, सुभाष तथा नेहरू को जनप्रिय बनाया था,
भगतसिंह आजाद जैसे शहीदों ने जय हिन्द का नारा लगाया था।
संविधान ने देश हित में हिंदी की गरिमा बढ़ाई थी,
बहुजन की बोली हिंदी राजभाषा पद पर बैठाई थी।
संपर्क भाषा एक यही, देश को एक सूत्र में बाँध सकती है,
व्यापार करना है तो यही भाषा जनमानस जुड़ा सकती है।
हिन्दुस्तान के हम है वासी हिंदी हमारा नारा है,
हम है देश की नई पौध राष्ट्रभाषा इसे बनाना है।

वीरेन्द्र सिंह पाल
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

"गूंजी हिंदी विश्व में स्वप्न हुआ साकार,
राष्ट्र संघ के मंच से हिंदी की जयकार।"

- अटल बिहारी बाजपेयी

हिन्दी: हमारी शान

पढ़ा था विद्यालय में विषय गणित और विज्ञान, पर कभी ना दिया मैंने हिंदी पर ध्यान,
हिंदी है मेरी सबसे बड़ी पहचान, उसके बिना सब पूछते क्या है तेरा मान।
हिंदी को दिलाना है विश्व में सम्मान, कभी न देख सकूंगा हिंदी का अपमान,
हिंदी को हमें दिलाना है उसकी खोई हुई पद हिंदी के सम्मान से बड़ा नहीं किसी का कद।
हिंदी को हमने माना अपनी राष्ट्रभाषा विश्व में बोली जाए यह है हमारी आशा,
आज समय एसा है सबको भाता अंग्रेजी पर हिंदी की मिठास को सब समझते पहेली।
हिंदी हमारी आशा है हिंदी हमारी भाषा है हिंदी की उन्नति हो यह हमारी अभिलाषा है,
हिंदी को रुकने ना देंगे हिंदी को झुकने ना देंगे।
हिंदी से सब कुछ सीखा है इसको कभी मिटने न देंगे,
क्यों समझते हैं सब अंग्रेजी बोलने को महान।
भूल गए हम क्यों अंग्रेजी ने बनाया था हमें वर्षों पहले गुलाम,
सारी भाषाए लेती हिंदी का सहारा जय हिंद जय भारत यह नारा हमारा।
आज उसी भाषा को हम क्यों करते प्रणाम क्यों?
क्यों केवल 14 सितम्बर को ही होता हिंदी का सम्मान,
जागो भारतीयों कहां गया हमारा स्वाभिमान।

हिंदी हमारी आन है हिंदी हमारी शान है,
हिंदी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।
हिंदी हमारी वर्तनी हिंदी हमारा व्याकरण,
हिंदी हमारी संस्कृति हिंदी हमारा आचरण।
हिंदी हमारी वेदना हिंदी हमारा गान है,
हिंदी हमारी आत्मा है भावना का साज़ है।
हिंदी हमारे देश की हर तोतली आवाज़ है,
हिंदी हमारी अस्मिता हिंदी हमारा मान है।
हिंदी निराला, प्रेमचंद की लेखनी का गान है,
हिंदी में बच्चन, पंत, दिनकर का मधुर संगीत है,
हिंदी में तुलसी, सूर, मीरा जायसी की तान है।
जब तक गगन में चांद, सूरज की लगी बिंदी रहे,
तब तक वतन की राष्ट्रभाषा हिंदी रहे।
हिंदी हमारा शब्द, स्वर, व्यंजन, अमिट पहचान है,
हिंदी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।

सुश्री मानवी सिंह पुत्री श्री वीरेन्द्र सिंह पाल
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

हिंदी केवल भाषा नहीं बल्कि हमारे संस्कृति का अभिन्न अंग हैं

हिंदी के विषय में स्मरणीय तथ्य बताना चाहता हूँ कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था कि हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की सभी साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है, तो समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती का कहना था - हिंदी के माध्यम से सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक, सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएंगे। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देकर इतिहास रचा था। जब तक देश के समर्थ व्यक्ति हिंदी को अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में नहीं स्वीकारेंगे तब तक हिंदी को उसका सम्मान मिलना आसान नहीं है। आजकल माता पिता भी बच्चों को फर्राटेदार अंग्रेजी में बात करते देखना चाहते है लेकिन हिंदी में समाए ज्ञान की उनको जानकारी है ही नहीं। हमें समझना होगा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है यह हमारी पहचान है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

हनुमान प्रसाद
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

कर्म सिद्धांत

कर्म के तीन प्रकार होते है - **संचित कर्म , प्रारब्ध कर्म एवं क्रियमाण कर्म।**

संचित कर्म - यह वो कर्म होते है जो बहुत वर्षों से एकत्रित हो गए होते है। जैसे खेती का अन्न जब जमा हो तो गोदाम बनता है वैसे ही हमारे जितने जन्म हो गये है, उन सब जन्म के कर्म एकत्रित होते रहते है।

यह सब एकत्रित हुए कर्म, चाहे अच्छे हो या बुरे हमारे वर्तमान शरीर को बनाते है। वर्तमान में जो हमें शरीर मिला है उसे प्रारब्ध कर्म कहते है। जैसे गोदाम से जितना खाने के लिए अन्न निकाला जाता है, उस से हमारा वर्तमान में पोषण होता है, ठीक वैसे ही, यह वर्तमान शरीर संचित कर्मों के गोदाम से निकाले गए कुछ कर्मों की देन है। केवल अच्छे कर्म किये होते तो स्वर्ग मिलता, केवल बुरे कर्म किये तो नरक मिलता, दोनों किये इसलिए मनुष्य शरीर मिला।

इसी गोदाम में जब कुछ नया दाना खेती से निकालकर डालते है, उसी प्रकार हमारे वर्तमान कर्म संचित कर्मों के गोदाम में जाकर मिल जाते है। इन् वर्तमान कर्म को क्रियमाण कर्म कहते है।

अगर हम अपने जीवन में हमारे नवीन कर्म को संभाल ले और पीछे गोदाम में पड़े कर्मों को कोई आग लगा दे यानी संचित कर्म को कोई खत्म कर दे और इसी के साथ हमें कोई इतनी क्षमता प्रदान कर दे कि जो हमारा प्रारब्ध है उसे हम सह जाए या प्यार से भोग ले तो हम इस माया जाल से निकल जायेंगे। हमारे पुराने कर्मों को सिर्फ भगवान् ही खत्म कर सकते है। यह तभी होगा जब हमारी बुद्धि सुमति हो जाए और हम अच्छे कर्म करे।

सन्मुख होई जीव मोहि जबहि।

कोटि जनम अघ नासहि तबही।।

यानी यदि मनुष्य निर्मल अन्त:करण के साथ उनकी शरणागति में आता है तो वो उसके करोड़ों जन्मों के पापों को धो देता है। विधि निषेध के कारण हमने जो पुराने बुरे-अच्छे कर्म किये है, वो बहुत जन्मों के है, उनको भगवान ही भस्म कर देंगे। भगवान् का आश्रय लेकर नाम जप भजन ही हमे प्रारब्ध को सहने की शक्ति देता है एवं अच्छे कर्म करवाता है।

कुमारी पारुल गोयल
कार्यालय अधीक्षक

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

समाचार पत्रों में उप क्षेत्रीय कार्यालय, वडोदरा

वडोदरा में ईएसआई के लाभार्थियों को केंद्रीय श्रम राज्यमंत्री ने सौंपे चेक

पत्रिका ह्यूमन एंगल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

अहमदाबाद/वडोदरा. केंद्रीय श्रम व रोजगार राज्यमंत्री रामेश्वर तेली ने वडोदरा में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) के उप-क्षेत्रीय कार्यालय में हाल ही समारोह में ईएसआई लाभार्थियों को हितलाभ के चेक सौंपे इनमें कोविड राहत योजना के तहत मृतकों के आश्रितों - विजयलक्ष्मी अशोक जैना को 1,12,706 रुपए, निखिल जैना को 75,138, अनिल जैना को 75,138 रुपए और आश्रित हितलाभ के परिजन सुमित्रा चौहान को 56,110 रुपए का चेक सौंपा गया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री तेली ने श्रमिकों को प्रोत्साहित किया और वडोदरा में ईएसआईसी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण किया।

ईएसआईसी के गुजरात के अपर आयुक्त व क्षेत्रीय निदेशक रणेश कुमार गौतम ने स्मृति चिन्ह भेंटकर केंद्रीय राज्यमंत्री तेली का स्वागत किया और राज्य में विभिन्न परियोजनाओं व ईएसआई योजना की प्रगति के बारे में जानकारी दी। दिल्ली से आए अधिकारी पुष्पालीन के बैका, एईएसआईसी वडोदरा के उप निदेशक मुकुल वत्स, सहायक निदेशक कुमार कुंजन, गोत्री अस्पताल के डॉ. एम. रामानुज, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी नीतिरपालसिंह भी मौजूद थे।

કર્મચારી રાજ્ય વીમા નિગમ દ્વારા સ્વચ્છતા ઝુંબેશ

ગુજરાત વૈભવ

केन्द्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस तथा श्रम व नियोजन राज्यमंत्री रामेश्वर तेली ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उपक्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा का निरीक्षण किया

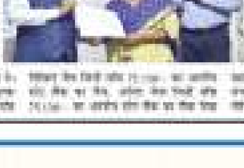

કર્મચારી રાજ્ય વીમા નિગમનું સ્વચ્છતા અભિયાન શરૂ
ગોત્રી હોસ્પિટલ પરિસરમાંથી 10 ક્વિન્ટલ કચરો સાફ કરાયો

સિટી રિપોર્ટર | વડોદરા

ભારત સરકારના "સ્વચ્છતા અભિયાન 2023" ઝુંબેશ અંતર્ગત સ્વચ્છતાની જાગૃતતા ફેલાવવા માટે કર્મચારી રાજ્ય વીમા નિગમના 80 સભ્યો દ્વારા 29 સપ્ટેમ્બરના રોજ સવારે 9થી 12 કલાક સુધી ગોત્રી હોસ્પિટલ પરિસર અને આજુબાજુની 5 એકર જગ્યામાં 10 ક્વિન્ટલ કચરાને સાફ કર્યો હતો.

આ સફાઈ ઝુંબેશમાં વડોદરા વિભાગ કાર્યાલયના અધિકારીઓ, આઈ. પી., ઉપરાંત હાઉસ કિપીંગ સ્ટાફ એમ કુલ 80 જેટલા વ્યક્તિઓ દ્વારા સ્વચ્છતાનું કાર્ય પૂર્ણ કરી સ્વચ્છતા નો સંદેશ પુરો પાડવામાં આવ્યો હતો. જેમાં નિગમના પશ્ચિમ ઝોનના વીમા આયુક્ત રામજી લાલ મીના, નાયબ નિયામક વિમલ રાવત, ઉપરાંત અન્ય અધિકારીઓ દ્વારા સર્વેની દેખરેખ અને મુલાકાત લીધી હતી. ત્યારબાદ સ્વચ્છતા અભિયાનનું કાર્ય શરૂ કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં કુલ 4 સમૂહમાં કાર્યનું વિભાજન કરવામાં આવ્યું હતું.

જેથી સ્વચ્છતા અભિયાનનું કાર્ય ઝડપી અને કાળજી સાથે થાય. આ કાર્યક્રમ હેઠળ દરેક સમૂહને માસ્ક તથા ગ્લોવ્ઝનું વિતરણ કરી અને ત્યારબાદ સ્વચ્છતાનું કાર્ય શરૂ કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં બિનજરૂરી વૃક્ષોનું ઉપરાંત ઝાડી-ઝાંખરાનું નિકાલ કરવામાં આવ્યું. રસ્તાઓની સાફ-સફાઈ કરી આજુબાજુની ગંદકી દૂર કરવામાં આવી હતી.

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला

हिंदी
पखवाड़ा - 2023

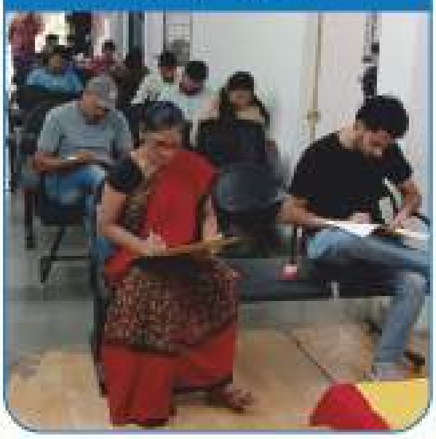

सुविधा समागम & निधि आपके निकट 2.0 कार्यक्रम, जीआईडीसी नंदेसरी

कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2023

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के अंतर्गत पुस्तकों एवं पुस्तकालय की स्वच्छता संबंधी गतिविधि (सोशल मिडिया में राजभाषा प्रयोग)

श्री पन्नी लाल मीणा, प्रवर श्रेणी लिपिक, क.रा.बी.नि. (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार), वडोदरा को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्र सरकार), वडोदरा के तत्वावधान में बैंक प्रशिक्षण केंद्र, वडोदरा द्वारा आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार स्वरूप रजत पदक, 400 रु. नकद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया

चिड़ियां दा चंबा

ये वाक्य पंजाब में काफी प्रसिद्ध है और इसको पुराने समय से लड़कियों के लिए कुछ इस तरह से इस्तेमाल किया जाता है:-

पुराने समय में आने जाने के साधन कम हुआ करते थे, लड़कियों की जब शादी हो जाती थी तो वे 1-1 साल के बाद अपने पीहर आ पाती थी। वह घर जैसे उनका घर रह ही नही जाता था। एक बहुत ही प्रसिद्ध गाना है पंजाबी में जो लड़कियों की विदाई पर उनकी भावनाओं को प्रकट करता है:- साडा चिड़ियाँ दा चंबा वे, बाबल उसी उड़ जाना....

साडी लम्बी उडारी वे, बाबल केहरे देश जाना....

इन पंक्तियों का बहुत ही सरल सा अर्थ है जो इस प्रकार है इसमें लड़की अपने पिता से कहती है कि बाबुल हम लड़कियां गौरैयों का वह झुंड है, जिन्हें आज नही तो कल उड़ जाना है अपने ससुराल चले जाना है, और कितनी दूर, किस गाँव जाना है, वापिस कब तक आना होगा, पता नहीं होता है।

पर आज का समय ऐसा है कि लड़कियों के साथ साथ लड़के भी इस कथन से खुद को जोड़ पाएंगे। आज के समय में आने जाने के बहुत साधन हो गए है: ट्रेन है, जहाज है, जिन्होने बहुत सी दूरियों को कम कर दिया है। वही जहां परिवहन के साधनों ने आना जाना आसान किया है, आज के समय में लड़के भी अपने परिवार से इतनी दूर बैठे है कि साल में दो बार ही उनसे मिलने जा पाते हैं, घर की कमी महसूस करते हैं। नौकरी करना आज के समय में उतना आवश्यक है कि परिवार को छोड़ना मंजूर किया है बच्चों ने नौकरी की तलाश में, कितने ही बच्चे विदेश चले जाते है, अपने सुनहर भविष्य की कल्पना को मन में लिए विदेश के जहाज़ में चढ़ जाते हैं और कई कई सालों तक अपने देश में अपने परिवार के पास नही जा पाते। पुराने समय में जहां ये कथन केवल लड़कियों के लिए इस्तेमाल होता था, वही आज ये इस युग के हर बच्चे पर लागू होता है, दुनिया की आगे बढ़ने की होड़ ने बच्चों को अपने परिवार से, अपने लोगो से काफ़ी दूर कर दिया है। काफी बार तीज त्यौहार पर भी बच्चे अपने घर नही जा पाते, एक साल में इतने त्यौहार आते हैं कि हर त्यौहार अपने परिवार के साथ मनाना संभव नही हो पाता, त्यौहार में भी चुनाव करना पड़ता है कि किस त्यौहार पर घर जाया जाए ओर किस पर नही। विदेश में रहने वालों के लिए तो जैसे विदेश के त्यौहार ही अपने हो जाते है। जबकि परिवार की कमी महसूस होना स्वाभाविक है, परिवार के साथ त्यौहार मनाने का जो मज़ा है, वो कही ना कही अधूरा रह ही जाता है। हमारे देश की संस्कृति ही ऐसी है जो हमें हमारे परिवार से जुड़े रहना सिखाती है, भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जिसमें संयुक्त परिवार में रहने की अवधारणा है।

पर जैसे कहते हैं कि समय के साथ चलना पड़ता है और आज का समय हमें यही सिखाता है कि "चलते रहने का नाम ही जिंदगी है"।

बस ये युही कुछ जज्बात थे, एक यादृच्छिक विचार जिस से कुछ लोगों के मन जुड़ सकेंगे।

कुमारी तरनप्रीत कौर
कार्यालय अधीक्षक

बच्चों में बढ़ता क्रोध एवं बोलने की समस्या

आजकल के बच्चों में देखा जा रहा है कि वे जल्दी क्रोधित हो जाते है या क्रोधित प्रवृति के होते जा रहे हैं। वे किसी भी चीज के लिए जिद करना, ना मिल पाने पर तुरंत क्रोधित हो जाना यह आम होती जा रही हैं। खास करके जब से स्मार्ट फ़ोन तथा इन्टरनेट का प्रचलन चालू हुआ है तब से बच्चों में क्रोध होने की प्रवृति काफी ज्यादा हो गयी हैं। आज के समय में देखा जा रहा है कि बच्चों को जन्म के तुरंत बाद से ही उन्हें खेलने या मन बहलाने के लिए मोबाइल दे दिया जाता हैं। जिससे बच्चें मोबाइल के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं और माता पिता को भी ज्यादा मेहनत भी नही करनी पड़ती हैं। आज के समय में लोग संयुक्त परिवार में रहना ज्यादा पसंद नहीं करते हैं और माता-पिता दोनों नौकरी में होने की स्थिति में बच्चों को समय नही दे पाते हैं। इसी कारण से बच्चें शुरूआती दिनों से ही मोबाइल में लगे रहते हैं जिससे शारीरिक थकान नही होने के कारण भूख भी नहीं लगती हैं और न ही जरूरत के हिसाब से नींद ले पाते हैं, जिससे शारीरिक तौर पर जो विकास बच्चों में होना चाहिए वह नहीं हो पाता हैं। यह मेरा अनुभव भी रहा हैं कि मेरे आस-पास या जानकारी में जो बच्चों को जन्म से ही मोबाइल की लत लगी होती हैं और वे ठीक ढंग से शब्दों का उच्चारण भी नहीं कर पा रहे है क्योंकि वे मोबाइल में जो भाषा ज्यादा देखते हैं, वो न तो उनकी मातृभाषा होती हैं ना ही उसे समझते है, जिससे आज के बच्चों में देर से बोलना या रूक-रूक कर बोलना आम बात हो गई हैं। यह समस्या ज्यादातर शहरों के बच्चों में देखा जा रहा हैं। दूसरी तरफ गाँव के बच्चें या जिनके घर स्मार्ट फोन का उपयोग कम होता हो उनके बच्चों का सामान्य बच्चों की तरह समय के अनुसार शारीरिक विकास होता हैं। यह सब समस्या उनके बच्चों में नहीं देखी जाती हैं।

माना कि मोबाइल या इन्टरनेट आज के युग में जरूरी है पर इतना भी जरूरी नहीं कि जिससे आने वाली पीढ़ियों का मानसिक तथा शारीरिक विकास न हो सकें।

अजीतकुमार सिंह
सहायक

स्वाद मेरे बिहार का (लिट्टी चोखा)

भारत एक बहुरंगी देश है। कहावत है कि यहाँ एक कोस पर पानी तथा दुसरे कोस पर वाणी बदलती है। इस बहुरंगी देश के खान-पान की बात करे तो इस मामले में भी यह देश अलग है। आइए बहुरंगी भारत के बहुरंगी स्वाद मे से बिहार का एक स्वाद (लिट्टी चोखा) के सफर पर चलते है।

बिहार का नाम लेते हि इस राज्य के एक मजेदार भोजन की याद स्वत: ही आ जाती है। वह है लिट्टी चोखे के देशी स्वाद का।

यह कहने की जरूरत नहीं है कि आम आदमी के इस जायके की मकबूलियत बिहार की सीमाओ को लांधकर देश-दुनिया मे पहुंच चुकी है। लिट्टी के गेहूँ के आटे, चने के सत्तू से बनाया जाता है। आटे मे सत्तू, प्याज, लहसुन, अदरक, अजवाइन, अचार के मसाला आदि चीजो को मिलाकर इसें कोयले अथवा उपले की आग मे पकाया जाता है। आम चीजों से बना लिट्टी न केवल स्वाद में जायकेदार होता हैं, बल्कि सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है।

रोशन कुमार
प्रवर श्रेणी लीपिक

व्यायाम का महत्व

हमारे वेद ऋषि यूँ ही नही कहते की व्यायाम करना चाहिए। आज कल के नौजवान-युवा 30 की उम्र तक आते आते अपनी स्फूर्ति खोने लगते है और 40 वर्ष की आयु तक आते आते उनका शरीर बीमारियों का घर बन जाता है। यह सब व्यायाम न करना एवं सही खान पान के अभाव के कारण है। वैसे तो यह भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगो को व्यायाम करने के लिए समय नही मिल पाता है। व्यायाम का मतलब सिर्फ और सिर्फ अपने इस मूल्यवान शरीर का ध्यान रखना ही है।

व्यायाम करने से शरीर में एक गजब की स्फूर्ति भर जाती है। रक्त का संचार बढ़ जाता है। जिसकी वजह से शरीर में जकड़न या दर्द होता है वह गायब हो जाता है। शरीर में लचीलापन आता है। प्रतिदिन कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होती है। रोग प्रतिकारक क्षमता में वृद्धि होती है। मोटापे को कम करने में मदद मिलती है। साथ ही ह्रदय संबंधित बीमारियों के सामने प्रतिरक्षण मिलता है।

व्यायाम करने का सही समय सुबह माना जाता है लेकिन अपने समय के अनुकूल जो भी समय ठीक लगे उस समय आपको व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम करने के लिए छत पर या बगीचे में उत्तम रहता है। सबसे उत्तम व्यायाम चलने को माना जाता है, दिन में 30-40 मिनट लगातार चलने से भी काफी लाभ मिलता है। एक नियत समय पर ही व्यायाम करना चाहिए ताकि व्यायाम करने के लिए एक नियमितता बनी रहे।

निम्न व्यायाम को अपनी रोजमर्रा जिंदगी में स्थान देना चाहिए:-

1. चलना / टहलना
2. साइकिल चलाना
3. सीढ़ियाँ चढना और उतरना
4. उल्टे पाँव सौ कदम चलना
5. रस्सी कूदना (100)
6. सूर्य नमस्कार (05 से शुरू करके 100 तक)
7. अनुलोम विलोम (05 मिनट)
8. कपाल भांति (05 मिनट फिर बढाकर 15 मिनट तक)

उपर्युक्त बताये गए व्यायाम सबसे ज्यादा असरदार और आसान है, जिसके लिए ना ही कोई ज्यादा खर्च होता है बल्कि कम समय लगता है। कहते है कि जिंदगी में अनुशासन बहुत जरूरी होता है। बस तो फिर व्यायाम को नियमित, अनुशासन एवं अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाकर परिवर्तन के लिए तैयार हो जाइए। अपने आप को दिन के 5 मिनट देने से ही आपकी काया कैसे कंचन बन जाती है।

श्रीमती रौनक एच. परमार
सहायक

कामायनी

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।

नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतना।"

कामायनी श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक महाकाव्य है। जय शंकरप्रसाद छायावाद के कवि माने जाते है और कामायनी छायावाद का सर्वोत्तम काव्य माना जाता है। जयशंकर प्रसाद जी के इस महाकाव्य में प्रधान पात्र आदिपुरुष "मनु" कामपुत्री कामायनी "श्रद्धा" और "इड़ा" है। इनका उल्लेख शतपथ ब्राह्मण व महाभारत एवं उपनिषद व पुराणों में भी मिलता है। इन चरित्रों का रूपक का निर्वाह ही इतना सुन्दर व उचित तरीके से किया गया है कि ये ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में पूर्णतयाः एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए। साथ ही इसमें जल पलायन की एक पौराणिक ऐतिहासिक घटना को निर्मित किया है।

मनु मन के सामान अस्थिर प्रकृति है। पहले वह श्रद्धा की प्रेरणा से तपस्वी जीवन त्याग कर प्रेम और प्रणय का मार्ग ग्रहण करते है, फिर असुर पुरोहित आकुली और किलात के बहकावे में आकर हिंसावृति और स्वेच्छाचरण के वशीभूत को करत श्रध्धा का सुख, साधन, निवास छोड़कर समीर की भाति भटकते हुए सारस्वत प्रदेश चले जाते है। वहां पर इड़ा के संसर्ग में बुद्धि की शरण में ना भौतिक विकास का मार्ग अपनाते है। परंतु वहां भी संयम के अभाव में इड़ा पर अत्याचार करते है और जिससे प्रजा से उनका संघर्ष होता है। इस संघर्ष से पराजित और प्रकृति के प्रकोप से उदास मनु जीवन से विरक्त हो पलायन कर जाते है और संत में श्रद्धा के पथ प्रदर्शन से आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते है। इस प्रकार श्रद्धा का अस्तित्व भाव और इड़ा की बोद्धिक क्षमता का मनु के मन पर जो प्रभाव पड़ा उसका सुंदर विश्लेषण इस काव्य में किया गया है।

कामायनी एक चिंतन प्रधान काव्य है जिसमे कवि मानव जाति को संदेश देना चाहता है कि केवल तप ही नहीं जीवन सत्य के रूप में कवि प्रेम के महत्व को भी बताता है। यह संसार कल्याण भूमि है और इस कल्याण भूमि में प्रेम ही एकमात्र प्रेय औत श्रेय है। यही प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ। प्रेम मानव की विभूति है परंतु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप ले लेता है। भेद-भाव, ऊँच-नीच की प्रवृति, आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती हैं जिससे जीवन दु:खमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी समरसता द्वन्द्व भाव के सामंजस्य जैसे दिन-रात, सुख-दु:ख, फूल-काँटे, भाव-अभाव की उपस्थिति की है। मानव अपनी इच्छानुसार किसी एक को छोड़ देता है यही उसके दु:ख का विषय है। यही द्वंदों की समन्वय स्तिथि ही सामरस्य है।

कामायनी मन से ह्रदय और बुद्धि तक की यात्रा है इसमें मनु मन का, श्रद्धा ह्रदय का और इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। मनु को श्रद्धा के सहयोग से सृष्टि की उत्पत्ति और इड़ा के द्वारा उन्नति पर पहुचकर अंततः पतन के पश्चात फिर श्रद्धा की शरण में शांति प्राप्त हुई।

श्रीमती रेजु धीमान
पत्नी श्री सुनील कुमार (सहायक)

संकुचित होती परिवार की अवधारणा

जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तब 'सामाजिक' की परिभाषा पढ़ी थी। एक बार हमारे अध्यापक श्री बनवारी जी ने मुझसे 'परिवार' की परिभाषा पूछी। मैंने वही भाषा बोली जो उन्होंने बताई थी "जब एक समूह के रूप में दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, भाई-बहन और भतीजे-भतीजी आदि रहते हैं, परिवार कहलाता हैं"।

उस समय मैंने इस परिभाषा को तोते की तरह रट रखी थी लेकिन नाना-नानी और मामा-मामी शब्द नहीं बोले, इस बात गुरूजी ने मुर्गा बनाकर पिटाई की थी। हाँ....हाँ....आज अचानक से वही बात याद आ गई तो मन किया कि 'परिवार' के बारे में कुछ लिखा जाए। अगर परिवार के उस स्वरुप पर गौर फरमाया जाए जो की बचपन की उस परिभाषा में वर्णित था, वास्तव में परिवार का कितना व्यापक स्वरुप है-

पन्द्रह-बीस लोग एक साथ रहते थे। एक आदर्शवादी पारिवारिक अनुशासन था, जिसमें बुजुर्ग लोग अपने परिवार के लिए अहम फैसले लेते थे बाकी सारे सदस्य उस फैसले को दिल से स्वीकार कर लेते थे। हर स्थिति में बुजुर्ग का फैसला पत्थर की लकीर होता था। सभी लोगो के दिल में एक-दूसरे के लिए मान-सम्मान और इज्जत वाली भावना होती थी। परिवार के सभी लोग अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को निःस्वार्थ और ईमानदारी से निभाते थे।

आज हम अपनी दादी या किसी बुजुर्ग सदस्य से सुनते है कि उनके समय में वो सुबह-शाम पन्द्रह-बीस लोगो का अकेले खाना बना देती थी, साथ में चाकी से आटा पीसना, मीलों दूर से कुओं से पानी लाना, गाय-भैसो का गोबर डालना, मवेशियों को चारा डालना एवं अन्य घर के सारे काम निपटाने होते थे। आजकल तो शादी तय करते वक्त ही घरवाले बोल देते है हमारी बेटी खाना नहीं बनाएगी, गाय-भैसों का गोबर नहीं डालेगी, घर का काम नहीं जानती है......एक ही काम जानती है बस। बुजुर्गों को बहुत सारी कहानियाँ याद होती थी कि पूछो ही मत....सीमित संसाधनों में भी सारे लोग तनावमुक्त होकर खुशी से जीवन जीते थे। शायद उनके बीच में कभी छोटी-मोटी समस्या आती होगी तब पन्द्रह-बीस लोगो के बीच चुटकियों में हल हो जाता होगा।

उस समय की सबसे महत्वपूर्ण चीज "संस्कार" होती थी। बच्चों की प्रथम गुरु माँ तथा प्रथम विद्यालय परिवार उसका अपना परिवार होता है। ऐसे परिवार में पले-बढ़े बच्चों के समूह में रहना, सम्मान, आदर्शवादी शिक्षा, अनुशासन, निडरता, साहस, अपर्याप्त संसाधनों में जीवनयापन करना, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्य आदि गुणों का विकास परिवार में रहते-रहते हो जाता था जो कि उनके जीवन को सार्थक एवं खुशहाल बनाने के लिए पर्याप्त था।

परिवर्तनशील समाज में समय के साथ-साथ परिवार की परिभाषा एवं भूमिका बदलती दिखाई देती है। वर्तमान समय में 'परिवार' की नाममात्र परिभाषा दिखाई पड़ती है जिसमें व्यक्ति स्वयं, पत्नी और बच्चें सम्मिलित होते है। संकुचित परिवार के इस स्वरुप का समाज पर यह प्रभाव पड़ा है कि आज तमाम सुख सुविधाओं, उच्च स्कूली शिक्षा एवं पर्याप्त संसाधन होने के बावजूद जीवन में न कोई संस्कार, न कोई नैतिक मूल्य रह गए है। अकेलापन, सूनापन, डर, भय जैसी हजारों बीमारियों एवं बुरी लतों ने इन सूक्ष्म परिवारों को घेर लिया है। ऐसे सूक्ष्म परिवारों में पले-बढ़े बच्चों, पुरुषों और महिलाओं में न कुछ करने की इच्छाशक्ति होती है और न ही सहनशक्ति होती है। बात-बात पर झगड़े हो जाते है, विश्वास नाम-मात्र का रह गया है और स्वार्थवादी प्रवृति चरम पर पहुँच गई है। महत्वाकांक्षा, सुखवाद और उपयोगितावाद चरम पर है।

आज हम उस स्थिति में पहुँच गए है कि जहाँ से हमें पीछे मुड़कर देखने की जरुरत है। महत्वहीन होते शब्द 'संयुक्त परिवार' को वापिस समृद्ध और मजबूत बनाने की जरुरत है क्योंकि 'संयुक्त परिवार' हर दृष्टि से हमारे लिए लाभदायक है। इसमें खुश रहने के लिए परिवार के सभी सदस्यों के बारे में सोचना चाहिये। यह परिवार के सदस्यों को मिलनसार बनाता है। काम, विशेषकर कृषि कार्य को बांट कर किया जा सकता है। बच्चों और व्यस्क दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिवार ज़रूरी है। यह सभी बच्चों की देखभाल और परवरिश द्वारा उनके संपूर्ण विकास में योगदान देता है।

"परिवार से बडी कोई संपत्ति नहीं, पिता से बडा कोई सलाहकार नहीं, माँ की छाया से बडा कोई विश्व नहीं, भाई से बडा कोई भागीदार नहीं और बहन से बडा कोई शुभचिंतक नहीं"।

जय हिंद!
जय हिंदी!

हिंदी में काम, राष्ट्र का सम्मान

पंखी लाल मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

वो दौर कैसा होगा

वो शुरू कहाँ से होगा..., उसका छोर कैसा होगा...!
वो दुनिया कैसी होगा..., वो दौर कैसा होगा...!
सूरज अगर रौशनी को तरसे..., अम्बर अगर तारों को तरसे...!
बारिस अगर बादल को तरसे..., लहरें अगर किनारों को तरसे...!!
वो खामोशी कैसी होगी..., वो शोर कैसा होगा...!
वो दुनिया कैसी होगी..., वो दौर कैसा होगा..!!

कलम अगर स्याही को तरसे..., सरहद अगर सिपाही को तरसे...!
गाँव अगर चौपाल को तरसे..., शहर अगर राही को तरसे...!
वो सल्तनत कैसी होगी..., वो सिरमौर कैसा होगा...!
वो दुनिया कैसी होगी..., वो दौर कैसा होगा..!!

सागर अगर पानी को तरसे..., हवा अगर रवानी को तरसे...!
धरती अगर जवानी को तरसे..., खेत अगर किसानी को तरसे...!
वो इन्सान कैसे होंगे..., वो ढोर कैसा होगा...!
वो दुनिया कैसी होगी..., वो दौर कैसा होगा..!!

हाँ, वो शुरु कहाँ से होगा..., उसका छोर कैसा होगा...!
वो दुनिया कैसी होगी..., वो दौर कैसा होगा..!!

मनीष कुमार श्रीवास्तव
प्रवर श्रेणी लिपिक

एक छोटा सा दिया बेहतर है अंधेरे से

रातभर अंधेरे से लड़ता हुआ छोटा सा दियाँ अंधेरे से बहुत अच्छा है। यदि निराशा रूपी अंधेरें में चारों तरफ फैली हुई धुंध के कारण यदि हम सर्वश्रेष्ठ की खोज में जायेंगे। तो हमारे अत्याधिक निराशा में डूब जाने की संभावना और भी अधिक हो जाती है। इसलिए हमें इस बात पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए कि हमारे पास उपलब्ध मानवीय संसाधन का बेहतर उपयोग करके अधिक से अधिक उपयोगिता का सृजन कैसे कर सके। ना कि जो आपके पास नहीं है या संपूर्णता की तलाश में हम अपने आज के जीवन को बर्बाद कर दे। तथा आज के जीवन का आनंद न उठा सके।
जीवन की सार्थकता नकारात्मक से सकारात्मक तथा अंधकार से प्रकाश की तरफ अपूर्णता से पूर्णता की तरफ जाये। चारों तरफ फैल रहे नकारात्मकता जिससे धोखाधडी, चोरी, बेइमानी, अराजकता से ही इन लोगों मे सकारात्मकता की कमी हो गयी है और वे जीवन के नकारात्मक पक्ष मे फँसकर समाज तथा देश को नुकसान पहुचा सकता है।
हम जीवन मे छोटी - छोटी खुशियाँ को पूरा दिल लगाकर मनाना चाहिए। संपूर्णता को होते हुए अच्छाई की तरफ निरंतर कार्य करना चाहिए तथा समाज की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए। स्वयं मे छोटा छोटा बदलाव ही बडे बदलाव की पृष्ठभूमि तैयार करता है। इसलिए हमको अपने आप मे आवश्यक बदलाव छोटे तौर पर ही सही करते रहना चाहिए।

व्यक्ति को अपने आप मे धैर्य, निडरता, क्षमाशीलता, वाक् कौशल, नेतृत्व और सदगुणो का विकास अपने आप करते रहना चाहिए। इसके साथ मानव सेवा के कार्य भी करते रहेना चाहिए। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। हमारे अंदर बदलाव होगा तभी ही हमारे परिवार तथा समाज मे बदलाव संभव होगा। समाज में बदलाव से ही परस्पर उन्नति संभव है। चारों तरफ फैल रही अराजकता मे सदभाव तथा कौशल का नवकार्य आवश्यक हो जाता है। इसलिए आवश्यकता है कि हम मूर्खता पर ध्यान न देकर जो भी अच्छा है उस पर ध्यान दे सर्वांगीण विकास तभी संभव है।

अखिलेश अग्रवाल
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिंदगी: एक अनोखा सफ़र

कितनी अजीब है ये दुनिया, कितने भिन्न है विचार,
बहुत है आसमान में तारें और उतने ही लोगों के प्रकार।

मुलाकात होती है हर नई रोज़ एक नई शिकायत से,
कुछ आते है होकर स्वार्थी, कुछ नई नीयत से।

जाते है जब लोग छोड कर, खराब हालात हो कितनी ही,
ये भी नही पता चल पाता दुखते दिल को की जाने मैं उनके था मेरा दोष भी।

सब है मतलबी इस कलयुग की दुनिया में, मजबूर करना पड़ता है मन को ये सोचने पर,
गलत समझ लिए जाते है कुछ साफ दिल के लोग इसी सोच में उलझ कर।

कोई तो तरीका हो ये जानने का, कौन है साफ़ दिल ओर किसकी नीयत में है खोट,
थोड़ा सा मै खुद को बचा लू, इससे पहले लगे मेरे पर चोट।

कुछ टकरा जाते है अच्छे लोग भी इस जिंदगी के सफ़र में,
जीना भी इनके ही सहारे होता पर बन जाते है राहगुजर ये।

कुछ अच्छे लोगों के सहारे ही तो चल रहा है ये संसार,
चंद अच्छे लोगों ने ही संभाल रखा है ये कूटनीति के अम्बार।

श्रीमती प्रमिला
बहुकार्य कर्मी

हम सभी अपने परिवार के बीच संपूर्ण जीवन व्यतीत करते है, यही कारण है कि हमारा अपने परिवार के प्रति एक आत्मीय संबंध हो जाता है, जिसके चलते हमें अपने परिवार से प्रेम भाव जगता है, मै मेरे परिवार की सरल भाषा में एक कविता शेयर कर रहा हूँ:-

परिवार पर कविता

परिवार बनता है कई रिश्तों से मिलकर,
सुखी जीवन का आधार है एक परिवार,
सच्चे अहसास का मंदिर है यहाँ,
हर आंसुओ की परख होती है यहाँ,
खुशी की लहरों में यहाँ सदा।
दुःख झाग बनकर किनारे होता है,
यहाँ लफ्जों की नहीं भावों की कदर होती है,
पूरा जीवन भी कम लगने लगता है,
जब खुशियों की बहार गतिशील रहती है,
बड़ा ही मजबूत दुनिया में खून का रिश्ता होता है।
जो हर किसी के नसीब में नहीं लिखा होता है,
मन की गहराईयों में झाककर देखना कभी,
यहाँ ममता का समुंदर बहता है,
एकता शक्ति परिवार है,
जहाँ हर एक का प्यार है।
मुसीबत आये किसी एक पर तो,
सहारा बनता पूरा परिवार है,
ममता इसकी नीव है प्रेम इसका आँगन है,
परिवार बनता है कई रिश्तो से मिलकर,
सुखी जीवन का आधार है एक परिवार।

श्री रिंकु कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

मीणा आदिवासी एक परिचय

प्राचीन भारतीय ग्रंथ ऋग्वेद में दर्शाया गया है कि मीणाओं के राज्य को संस्कृत में मत्स्य साम्राज्य कहा जाता था। राजस्थान के मीणा जनजाति के लोग आज तक भगवान शिव, हनुमान और कृष्ण के साथ-साथ देवी की पूजा करते रहे हैं। मीणा आदिवासी समुदाय भील जनजाति के समुदाय सहित अन्य जनजातियों के साथ आंतरिक साझा करता है। वास्तव में ये मीणा जनजाति अन्य जनजातीय समुदायों के सदस्यों के साथ बहुत अच्छे संबंध साझा करती हैं। मीणा लोग वैदिक संस्कृति के अनुयायी हैं और यह भी उल्लेख किया गया है कि मीणा समूहों में भारमान और सिथियन पूर्वज थे। आक्रमण के वर्षों के दौरान, 1868 में मीणाओ के कई नए समूहों का गठन किया गया है, जो कि अकाल के तनाव के कारण राजपुताना को उजाड़ दिया।

राजस्थान के इतिहास में मीणाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे पहले, राजपूत और प्रमुखों ने दिल्ली के राजाओं के अधीन रहते हुए देश के एक बड़े हिस्से पर शासन किया। मीणा समुदाय को मुख्य रूप से चार बुनियादी क्षेत्रों में जमींदार मीणा, चौकीदार मीणा, परिहार मीणा और भील मीणा में रखा गया था। पूर्व में मीणा देश के विभिन्न संप्रदायों में बिखरे हुए थे और आसपास के क्षेत्र में बदलाव के कारण उनके चरित्र अलग-अलग हैं। करौली, सवाई माधोपुर, जयपुर, गंगापुर क्षेत्र के मीणा पिछले चार सौ वर्षों के लिए सबसे महत्वपूर्ण काश्तकार हैं। कई गाँवों से धनगर और मोधियों को मीणाओं द्वारा बाहर निकाला गया और उनके कब्जे को फिर से स्थापित करने में कामयाबी मिली।

जमीदार मीणा: जमीदार या पुरानावासी मीणा वे है कि जो प्राय: खेती एवं पशुपालन का कार्य वर्षों से करते आ रहे हैं। ये लोग राजस्थान के सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा व जयपुर जिले में सर्वाधिक हैं।

चौकीदार या नयाबासी मीणा: चौकीदार या नयाबासी मीणा वे मीणा हैं जो स्वछंद प्रकृति के थे। इनके पास जमीने नहीं थीं, इस कारण जहां इच्छा हुई वहीं बस गए। उक्त कारणों से इन्हें नयाबासी भी कहा जाता है, ये लोग सीकर, झुंझुनू, एवं जयपुर जिले में सर्वाधिक संख्या में हैं।

प्रतिहार या परिहार मीणा: यह अपूर्ण ज्ञान है। प्रतिहार या परिहार एक गोत्र है। इस गोत्र के मीणा टोंक, भीलवाड़ा तथा बूंदी जिले में बहुतायत में पाये जाते हैं। यह गोत्र अपनी प्रभुत्वता के कारण एक अलग पहचान रखती है। प्रतिहार का शाब्दिक अर्थ उलट का प्रहार करना होता है। ये लोग छापामार युद्ध कौशल में चतुर थे इसलिये प्रतिहार मीना कहलाये।

भील मीणा: ये लोग सिरोही, उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं चित्तौड़गढ़ जिले में प्रमुख रूप से निवास करते हैं।

मेव मीणा: यही लोग मेरवाड़ा और गोड़वाड़ के प्रमुख निवासी है, इन्होंने लोक देवता तेजाजी के साथ युद्ध भी किया था। अधिकांश मेव अब रावत बन चुके हैं।

और भी कई शाखाएं हैं जैसे उजला मीणा।

संस्कृति : कहा जाता है कि मेवों (मेव/मेवाती) की उत्पत्ति मीणाओं से हुई थी और इस कारण से मीणाओं की नैतिकता और संस्कृति में समानता है। राजपूतों को मीणाओं, गुर्जर समुदार, जाट और अन्य योद्धा जनजातियों का प्रवेश माना जाता है। त्यौहार, संगीत, गीत और नृत्य इस बात का प्रमाण है कि इन मीणा जनजातियों की संस्कृति और परंपरा काफी उज्ज्वल है।

यद्यपि मीणा जनजाति इन त्यौहारों को मनाती हैं, लेकिन उन्होंने स्थानीय मूल के अपने अनुष्ठानों और संस्कारों को शामिल किया है। उदाहरण के लिए नवरात्रि का सातवां दिन मीणा जनजातियों के लिए उत्सव का समय है, जो कलाबाजी, तलवारबाजी और नाच-गाने के साथ आनंदित होते हैं।

मीणा दृढ़ता से विवाह की संस्था में विश्वास करते हैं। यह भोपा पुजारी हैं जो कुंडली के आधार पर मंगनी में शामिल होते है। इस राजस्थानी आदिवासी समुदाय में इस तरह के महान उत्सव के लिए बुलाते हैं। त्यौहारों की अधिकता मीणा जनजातियों द्वारा भी मनाई जाती है।

इस तथ्य की पुष्टि भगवान विष्णु के नाम पर मीनेश जयंती को प्राप्त करने की सैकड़ों प्राचीन संस्कृति से होती है। ये अपने समुदाय में जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित सभी अनुष्ठानों को करने के लिए एक ब्राह्मण पुजारी को नियुक्त करते हैं। अधिकांश मीणा हिंदू धर्म का पालन करते है।

मीणा समुदाय के लोगों के कपड़े अन्य जनजातिय लोगों से काफी अलग हैं, मुख्यत: महिलाओं के कपड़े डिजाइन कें अंतर के साथ शैली में बहुत अंतर हैं। एक मीणा महिला की पोशाक में लुगडी, घाघरा, कब्जा और कुर्ती शामिल होती है। झलरी का लहंगा एक अलग लहंगा है जो मीणा महिलाओं द्वारा पहना जाता है। टखने की लंबाई वाला घाघरा, जो आमतौर पर पीले

सफेद रंग के डिजाइन के साथ गहरे लाल या काले रंग के कपड़े से बना होता है, एक मीणा महिला की पहचान करने के लिए विशिष्ट चिह्न है।

मीना महिलाएं गहने के साथ खुद को सजाना पसंद करती है। मीणा महिलाओं का सबसे प्रमुख आभूषण चूड़ा है, जो उनकी वैवाहिक स्थिति का प्रतीक है। महिलाएं हांसली को गले में पहनती हैं नाक में नाथ कानों मे तिमणिया, पैंक्षी, चूड़ी, गजरा और हाथों मे चूड़ियाँ और ऊपरी बाजुओं में बाजूबंद, कमर पर कनकती, हाथ में हथफुल पहनती है। सभी विवाहित महिलाएं हमेशा लाख की बनी चूड़ा पहनती हैं। वे अपने पैरों पर कडी और पाजेब भी पहनती हैं। अधिकांश गहने चांदी से तैयार किए जाते हैं। मीणा महिलाएं आमतौर पर सोना नहीं पहनती हैं। वैवाहिक स्थिति के बावजूद, एक मीणा महिला अपने बालों को ढीला नहीं करती है। बाल करना उनकी नियमित जीवन शैली का एक हिस्सा है। यह आमतौर पर माथे के बीच में होता है, जिसे बोरला के साथ बंद किया जाता है, जो विविाहित महिलाओं के मामले में नकली पत्थरों से जड़ी होती है।

गले में सफेद तोलिया मीणा पुरूष की पहचान हैं, जिसे साफी कहते है।

मीणा पुरूष की पोशाक में धोती, कुर्ता या बंदगी और पगड़ी होती है, हालांकि युवा पीढ़ी ने शर्ट को पजामा या पतलून के साथ अपनाया है। सर्दियों के दौरान, मीणा पुरूष एक शॉल पहनते हैं, जो उनके शरीर के ऊपरी हिस्से को कवर करता है। एक शॉल गले में पहना जाता है, वह भी लाल और गहरे रंग मे होता है। दिलचस्प बात यह है कि शादी से मीणा व्यक्ति की वेशभूषा में बदलाव आता है। शादी के समय एक लंबा लाल रंग का ऊपरी वस्त्र पहना जाता है। यह बछड़ा-लंबाई वाला और सीधा है, जिसके किनारे लंबे हैं और पूरी आस्तीन के है। वे सामान्य रूप से धोती को निचले वस्त्र के रूप में पहनते है, जो कि टखनों के ठीक नीचे होता है। यह कडां पहना जाता है और डॉलांगी या तिलंगी धोती की तरब लिपटा होता है। मीणा पुरुष ज्यादा आभूषण नहीं पहनते हैं। सबसे आम गहने कान के छल्ले होते हैं जिन्हे मुर्की कहा जाता है। शादी के समय अन्य सामान में एक बड़ी तलवार और कलाई पर एक कड़ा शामिल होता है। पुरूष अपने बालों को छोटा और आमतौर पर खेल दाढ़ी छोटी मूंछे रखते है। मीणा समुदाय के साथ टैटू भी लोकप्रिय हैं। मीणा महिलाएं अपने हाथों और चेहरे पर टैटू प्रदर्शित करती हैं। सबसे आम डिजाइन डॉट्स, फूल या उनके स्वयं के नाम हैं। वे अपनी आँखों में कोहल पहनते हैं और शरीर के अलंकरण के रूप में चेहरे पर काले डॉट्स। गोदना पुरूषों के साथ ही लोकप्रिय है। मीणा जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली मुख्य भाषाओं में हिंदी भाषा, मेवाड़ी, मारवाड़ी, भाषा, धुंदरी, हरौटी, मालवी भाषा, गढ़वाली भाषा, भीली भाषा, आदि शामिल है।

पंकज मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

धरती हमारी नहीं, हम धरती के हैं

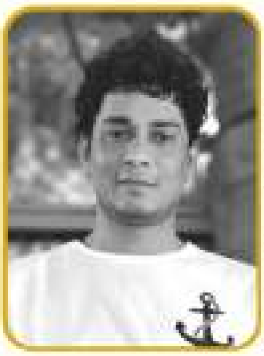

"धरती हमारी नहीं, हम धरती के हैं, यह एक ऐसा मुहावरा है जो हमें यह याद दिलाता है कि धरती एक **प्राकृतिक संसाधन** है और हम इसकी देखभाल करने के लिए जिम्मेदार हैं। धरती हमें जीवन, भोजन, **पानी और आवास** प्रदान करती है। यह हमारी प्रकृति, हमारे संस्कृति और हमारी सभ्यता की आधारशिला है।

यह धरती पर रहने वाले जीवों में से एक हैं। हम धरती के संसाधनों का उपयोग अपने जीवन को बनाए रखने के लिए करते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि धरती हमारी है। धरती एक **स्वतंत्र** इकाई है जिसकी अपनी अनूठी विशेषताएं और आवश्यकताएं हैं।

हम धरती के पर्यावरण को प्रदूषित करने, वनस्पति और वन्यजीवों को नष्ट करने, और प्राकृतिक संसाधनों का **अतिशोषण** करने के द्वारा धरती को नुकसान पहुंचा रहे है। यह धरती के लिए एक गंभीर खतरा है।

यदि हम धरती को बचाना चाहते हैं, तो हमें अपनी **जिम्मेदारी** समझनी होगी। हमें धरती के संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए और इसके पर्यावरण को स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखना चाहिए। हम निम्नलिखित तरीकों से धरती की रक्षा कर सकते है:

- ऊर्जा की बचत करें।
- पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग करें।
- कम गाड़ी चलाएं और अधिक पैदल या साइकिल चलाएं।
- प्लास्टिक और अन्य प्रदूषक पदार्थों के उपयोग को कम करें।
- वृक्षारोपण करें।
- वन्यजीवों की रक्षा करें।

हम धरती के लिए एक बेहतर भविष्य बना सकते हैं यदि हम सभी मिलकर काम करें। हमें धरती के प्रति अपनी **जिम्मेदारी** को समझना चाहिए और इसके लिए कार्य करना चाहिए।

श्री नरोत्तम कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस)

पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न कारणों और मुद्दों को लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बराबर चर्चा में बनी हुई है। कृत्रिम बुद्धिमता कंप्यूटर विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसका काम बुद्धिमता मशीन बनाना हैं। सरल शब्दों में कहे तो आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का अर्थ है एक मशीन में सोचने समझने और निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना। आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस को कंप्यूटर साइंस का सबसे उन्नत रूप माना जाता है जिसमे एक ऐसा दिमाग बनाया जाता है, जिसमे कंप्यूटर जो इंसानो की तरह सोच सके।

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस की शुरूआत 1950 के दशक में हुई थी, तथा इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस के जनक मेकार्थी थे। इसके जरिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसके आधार पर मानव मस्तिक काम करता है। आर्टिफीसियल इंटेलिर्जेस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने वाला सॉफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है, यह ऐसे अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में पांचवी पीढ़ी नामक योजना की शुरूआत की थी। इसमें सुपर कंप्यूटर के विकास के लिए 10 वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रतुत की थी। इसके बाद ब्रिटेन ने एल्वि नामक एक प्रोजेक्ट बनाया तथा यूरोपीय संघ के देशो ने भी एस्प्रिट नाम से एक कार्यक्रम की शुरूआत की थी।

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का उपयोग कम्प्यूटर गेम्स, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, प्रवीण प्रणाली, दृष्टि प्रणाली, वाक्य पहचान, बुद्धिमान रोबोट, इसके अलावा, बेहद जटिल सिस्टम को चलाने, खनन उद्योग, शेयर बाजार आदि क्षेत्रो में आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया जा रहा है।

इंटेलिजेंस रोबोट:- आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस की सहायता से रोबोट को प्रभावशाली और बुद्धिमान बनाया जाता है। जैसे 2016 में सऊदी अरब में डेविड हेनसेन (हेनसेन रोबोटिक्स के संस्थापक) ने सोफिया नामक रोबोट बनाया था। जिसे 25 अक्टूबर 2017 में सऊदी अरब ने इसे अपनी पूर्ण नागरिकता दी और किसी देश की नागरिकता हासिल करने वाली दुनिया की पहली रोबोट है। सोफिया नामक रोबोट का हाव-भाव बिलकुल मनुष्य जैसे है, मुंबई में जब एशिया का सबसे बड़ा टेक फेस्ट-2017 आयोजित किया गया तब इसके टेक फेस्ट में सोफिया रोबोट भी आई और उसने भारतीय वेशभूषा में साड़ी पहनी हुई थी और नमस्ते इंडिया में "सोफिया" कहकर लोगो का अभिवादन किया।

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस की मदद से डाटा पैटर्न को बारीकी से समझ के आगे की घटनाओ का काफी अच्छे से अनुमान लगाया जा सकता है।

फिल्म और ग्राफिक डिजाईन की दुनिया में बड़े बदलाव लेकर आने वाला है आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस के आने से प्रोडक्शन प्लानिंग से लेकर विजुअल इफेक्ट्स के क्षेत्र में मददगार साबित होगा।

आर्टिफीसियल इंटेलिर्जेस की संकल्पना बहुत पुरानी है। ग्रीक मिथकों में 'मेकेनिक मेन' की अवधारणा से संबंधित ऐसी कहानियाँ मिलती है अथार्त एक ऐसा व्यक्ति जो मनुष्य के जैसे नकल करता है। मानवता के फायदे के लिए हमने आग और बिजली का इस्तेमाल तो करना सीख लिए पर इसके बुरे पहलूओं से उभरना जरूरी है। इसी प्रकार आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस भी ऐसी ही तकनीक है और इसका इस्तेमाल कैंसर के इलाज में या जलवायु परिवर्तन से जुडी समस्यायों को दूर करने में भी किया जा सकता है। आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस का निर्माण हमारी सभ्यता के इतिहास के सबसे बड़ी घटनाओ में से हैं। लेकिन सच यह भी है कि यदि इसके जोखिमों से बचने का तरीका नहीं ढूंढा, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते है, क्योंकि तमाम लाभों के बावजूद आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस के अपने खतरे हो सकते है। यह शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमता का उदय हमारे लिए फायदेमंद भी हो सकते हैं और नुकसानदायक भी इसलिए इस संदर्भ में और ज्यादा शोध आवश्यक है।

श्री जितेन्द्र मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

होली मैं और तुम

तुम और मैं ना होकर काश हम, हम होते,
होली के इस त्योहार में हम घर पर होते,
कभी तुम जीतती कभी मैं जीतता,
होली में रंग लगाने के खेल में,
काश तुम और मैं घर पर होते,
कभी तुम मेरे आगे भागती,
कभी मैं तुम्हारे आगे,
रंग लगाने की होड़ में,
कभी तुम जीतती, कभी मैं,
फिर थक हार कर,
कुछ पल आराम कर,
मां की हाथों की बनी लस्सी-ठंडाई पीत,
काश तुम और मैं इस होली, घर पर होते।
फिर शाम को जब तुम लड्डू बांध रही होती,
तो बांस के पंखे से हवा मैं धौक रहा होता,
तुम्हारे माथे में आ रही जुल्फों को,
अपने हाथों से सँवार रहा होता,
काश तुम और मैं इस होली, घर पर होते।
किसी वर्ष मां-बाबा के संग हम तुम्हारे घर जाते,
रंग अबीर गुलाल और मिठाई लिए,
कभी वो हमारे घर आते,
अपने चेहरे पर मुस्कान लिए,
फिर शाम को सब बैठ कर,
एक दूसरे के संग अपने मां-बाबा के,
बचपन के किस्से सुनते,
काश मैं ओर तुम घर पर होते।
रात में सब बैठ कर फाग सुनते,
गांवों की महफिल में अपने राग बुनते,
कभी तुम गुनगुनाती,
कभी मैं गुनगुनाता,
कभी तुम सुनती अल्फ़ाज़,
कभी मैं सुनता जज़्बात,
काश तुम और मैं, हम होते,
इस होली के त्योहार पर, हम घर होते।
चाहता हूं साथ तुम्हारा,
समझता हूं मजबूरियां तुम्हारी,
और जानता हूं कि,
कुछ सपने काश कि आस पर टिके है,
मैं तो हूं घर पर, हर बार की तरह,
काश तुम भी आओ घर पर,
इस आस में हूं।
काश मैं और तुम, कम होते,
इस होली के त्योहार पर, घर पर होते।

विकास शुक्ला
प्रवर श्रेणी लिपिक

पापा तुम कब घर आओगे

तिरंगे में लिपटे,
तिरंगा कब लहराओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

हर रात निहारती तारों को सदा,
तलाशती तुम्हारा वजूद इस आस में,
कि कहीं तो दिख जाओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

खान-पान कि मनमानी,
दवाई लेने में आनाकानी,
अपने उस हिटलर बिटिया से,
फिर कब डांट खाओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

तिरंगे में लिपटे,
तिरंगा कब लहराओगे.
पापा तुम कब घर आओगे।

अफसर बिटिया, अफसर बिटिया कहकर,
बढ़ाते जिसका मनोबल सदा,
थे जिसके प्रेरणा के स्त्रोत,
उसे अफसर बिटिया बनते,
कब देख पाओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

अपनी खामोशी तोड़,
कब बहादुरी के किस्से सुनाओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

मेरे कंधे है कमजोर,
आँखें है आँसुओं से भरे,
जिम्मेदारियों को दे,
चिर निद्रां में कैसे सो पाओगे।

तिरंगे में लिपटे,
तिरंगा कब लहराओगे,
पापा तुम कब घर आओगे,
पापा तुम कब घर आओगे।

पूजा उपाध्याय
बहु कार्य कर्मी

भारत का स्वच्छतम शहर - इंदौर

आज मैं आपको हिंदी पत्रिका के माध्यम से अपने गृहनगर भारत के स्वच्छतम शहर इंदौर से अवगत करना चाहूंगी। इस रचना में इंदौर स्वच्छता शहर कैसे बना और हमारे जीवन में स्वच्छता के महत्त्व के बारे में भी बताना चाहूँगी।

इंदौर केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी स्वच्छता के लिए पहचान बना चुका हैं। इंदौर के स्वच्छता मॉडल को देखने के लिए देश के अन्य राज्यों के प्रतिनिधिमंडल आ चुके हैं। पहली बार 2017 में इंदौर को भारत का स्वच्छ शहर घोषित किया गया उसके बाद से लगातार नंबर एक शहर बना हुआ हैं। इसमें महान योगदान इंदौर के नागरिक और नगर निगम के सफाई कर्मचारियों का है जो दिन रात शहर की सफाई में लगे रहते हैं। सुबह सात बजे से ही नगर निगम के वाहन शहर के हर घर से कूड़ा संग्रह करने के लिए निकल जाते हैं। सर्वप्रथम इंदौर के नागरिकों को गीला और सुखा कचरा अलग-अलग करने को कहा गया। 2017 से 2023 तक अब नागरिकों को कूड़े को छह अलग-अलग श्रेणियों में अलग करने को कहा गया जो कि इस प्रकार है:- गीला कचरा, सूखा कचरा, प्लास्टिक कचरा, नॉन प्लास्टिक कचरा, इलेक्ट्रोनिक्स कचरा एवं सेनेटरी कचरा। श्रेणियों में कचरे को अलग करने का उद्देश्य रीसाइक्लिंग के समय कर्मचारियों के समय को बचाना है।

इंदौर में एशिया का सबसे बड़ा बायो सीएनजी संयंत्र बनाया गया जो अपशिष्ट निपटान प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शहर से एकत्र कचरे को संयंत्र के माध्यम से जैविक खाद एवं सीएनजी बायो गैस बनाई जाती है। जिस गैस का प्रयोग सिटी बस चलाने में भी किया जाता है। इस प्रकार इंदौर ने कचरे का प्रयोग शहर के आय के स्त्रोत के रूप में किया है। छह सालों में इंदौर के नागरिक स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते है और उनकी आदतें ही स्वच्छ पर्यावरण में रहने की हो गई हैं। वहां के नागरिक जहां भी जाते हैं अपने आस-पास कूड़ादान ही ढूंढते हैं।

अब मैं थोड़ा हमारे जीवन में स्वच्छता के बारें में बताना चाहूँगी। आज कल मैं भारत के जिस भी शहर में जाती हूँ वहाँ होर्डिंग्स पर डेंगू से बचे या बचने के उपाय लिखे होते हैं जो मुझे थोड़ा अजीब लगता है, परंतु यदि हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखें तो हम स्वच्छता से होने वाली बीमारियों से बच सकते हैं और अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए स्वयं की आदतों को बदल सकते हैं।

अतः अंत में मैं सभी से यह गुजारिश करना चाहूंगी कि अपने आस-पास के पर्यावरण को स्वच्छ रखें तथा विभिन्न बीमारियों से बचे एवं जिस प्रकार इंदौर ने स्वच्छता का रिकॉर्ड बनाया है वैसे ही अगर सभी शहर स्वच्छ रहें तो हम संपूर्ण भारत को स्वच्छ बना सकते हैं। भारत का नाम पूरी दुनिया में रौशन कर सकते हैं।

धन्यवाद।

श्रीमती पूर्णिमा सिसोदिया
बहुकार्य कर्मी

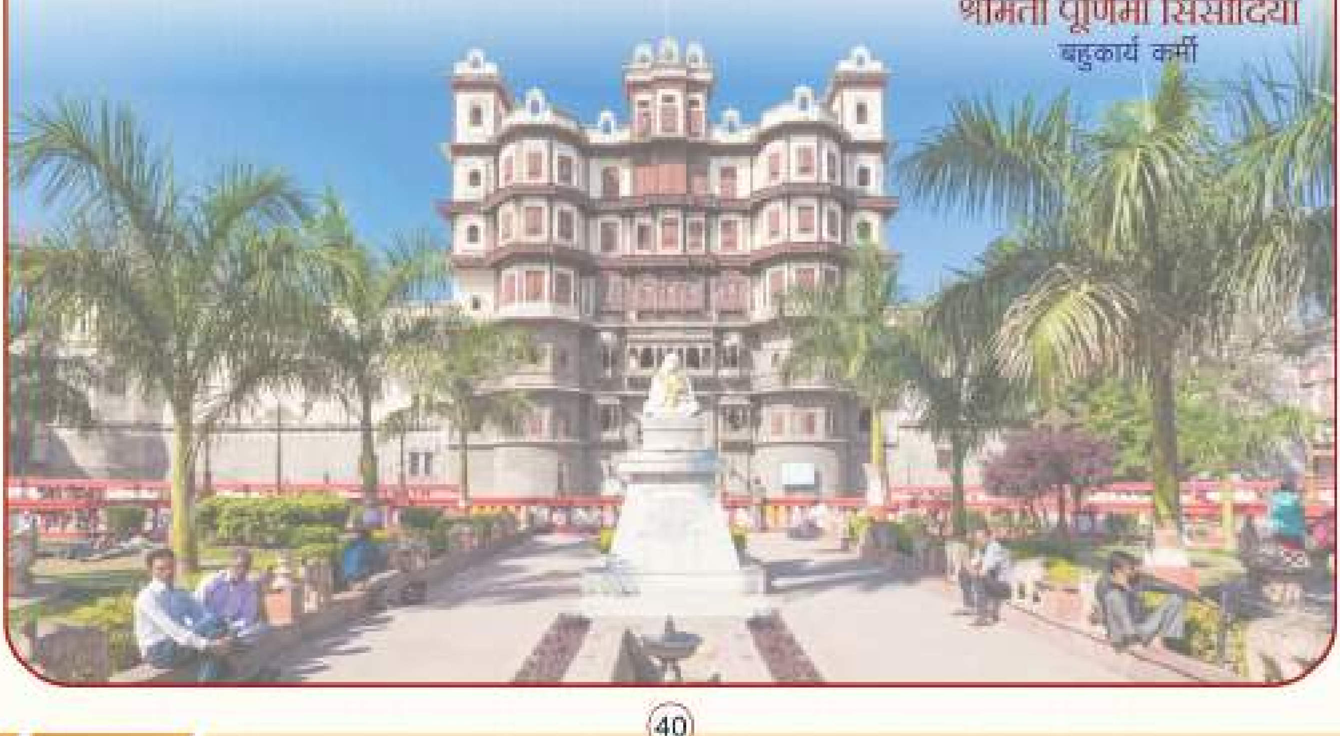

अभी शुरूआत है।

अभी तो बस शुरूआत है मेरी,
मंज़िल बहुत मुश्किल और ज़िद्दी है।
पर जानती नहीं है मुझे,
मेरे हौंसले ही मेरी ताकत है।
झुकाना चाहती है मुझे,
पर मेरे हौंसलों से अंजान है।
तोड़ना चाहती है मुझे,
पर मेरी कहानी से थोड़ी सी अंजान है।
मंज़िल मेरी बेईमान है,
मेरे हौंसलों से अभी थोड़ी सी अंजान है।

चार लोग

वे चार लोग जिनका डर पूरे समाज को होता है,
वे चार लोग क्या कहेंगे? लोग पूरा दिन ये सोच अपने सपने दफ़न करते हैं।

वो चार के डर से हम अपनी स्वतंत्रता खोते हैं,
उन चार के डर से बच्चों की पसंद को पैरों,
से कुचलते हैं।

भूख लगे तो रोटी ना मिलेगी उन चार के घर से,
मरने पर दवा भी नसीब न होगी, तुम्हें उन चार के घर से,
तो क्यों कांप रहे हो, उन चार के डर से।

तुम्हारे ऊंचाई पर होने से वे चार तुम्हारे कदम चूमेंगे,
और उन चार का डर छोड़ो, देखो तुम्हारे
सपने और खुशियाँ आसमान छू लेंगे।

दिल की बात

आज न जानें क्यों
फिर उड़ना चाहता हूँ।
छोड़कर इस दुनियां के बंधन,
फिर हँसना चाहता हूँ।
अभी तो छोटा नादान बच्चा था मैं,
फिर ये अचानक क्या हुआ।
जिम्मेदारी का ये पहाड़,
क्यों, और कैसे आकर मिटा।
इन सबसे अलग होना चाहता हूँ,
आज फिर उड़ना चाहता हूँ।

दीक्षांत मेहता
बहुकार्य कर्मी

कर्मचारी राज्य बीमा निगमः सामाजिक सुरक्षा

"किसी राष्ट्र के आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने का सर्वोत्तम परिचय उस राष्ट्र के सामाजिक रूप से उन्नत होने से मिलता है जो राष्ट्र अपने निम्न आय वर्ग के नागरिको की सामाजिक सुरक्षा के लिए जितना ज्यादा जागरूक तथा सक्रिय होगा वह राष्ट्र आर्थिक रूप से उतना ही ज़्यादा मज़बूत व सुदृढ़ होगा" ।

वर्तमान में अमेरिका विश्वपटल पर सर्वाधिक मजबूत आर्थिक महाशक्ति है। सामाजिक सुरक्षा शब्द का उद्गम औपचारिक रूप से सन् 1935 से माना जाता है, जब प्रथम बार संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया था जो की उपरोक्त पंक्तियों को चरितार्थ करता है।

सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम से आशय यह है कि उससे व्यक्ति को जीवन में कुछ जोखिमों तथा आकस्मिक घटनाओं के भार से सुरक्षा मिलती है जो भार वह स्वयं वहन करने में असमर्थ होता है, सामाजिक सुरक्षा योजना के माध्यम से वहन कर सकता है।

आज़ादी के साथ ही भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में भी इस तरह के कार्य की पुरज़ोर आवश्यकता महसूस हुई एवं नीति निर्माताओ ने सर्वप्रथम इस तरफ ध्यान दिया तथा **कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम**, 1948 को अधिनियम किया तथा इसके साथ ही भारत में सामाजिक सुरक्षा की नींव पड़ी तथा निम्न आय वर्ग के लोगों को अपनी सामाजिक सुरक्षा संबंधी **चिन्ताओं से मुक्ति** मिली।

आदर्श संविधान में वर्णित मौलिक अधिकार तथा नीति निर्देशक तत्व स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये भाग मिलकर संविधान की **आत्मा** तथा **चेतना** कहलाते है इन तत्वों का कार्य एक जनकल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है। कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम संविधान में वर्णित इन अधिकारो एवं कर्तव्यों का ही एक मिलाजुला रूप है एवं संविधान में वर्णित इन अधिकारों एवं कर्तव्यो की सुनिश्चित्ता के लिए प्रतिबद्व है।

राकेश कुमार सैनी
बहुकार्य कर्मी

"मैं उन लोगों में से हूं, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।"

- बाल गंगाधर तिलक

राजभाषा हिंदी : चुनौतियां एवं समाधान

राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के उद्देश्य से संपूर्ण भारत देश को तीन क्षेत्र "क", "ख", व "ग" क्षेत्र में बांटा गया है।

"क" क्षेत्र में आने वाले राज्य हैं जहां के निवासी हिंदी बोलने के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी में काम करने के लिए भी प्रवीण होते हैं और उनसे शत प्रतिशत हिंदी में काम करने की आशा भी की जाती है। "ख" क्षेत्र में आने वाले वह राज्य है जहां के निवासी हिंदी बोल सकते है तथा कार्यालय में कुछ कार्य भी कर सकते हैं मगर शत प्रतिशत नही कर सकते। "ग" क्षेत्र में देश के वह राज्य आते है जहां की स्थानीय भाषा हिंदी का प्रयोग न के बराबर है यानी कि यहां के निवासी ना तो हिंदी बोलते हैं ना ही कार्यालय में हिंदी में काम करते हैं और उनके स्कूली शिक्षा में भी हिंदी मुख्य विषय नहीं होता।

इन क्षेत्रों में हिंदी के कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए समिति भी बनाई गई थी जिसमें पाया गया था कि "क" क्षेत्र वाले राज्यों में भी हिंदी मे शत प्रतिशत काम नहीं हो रहा था तथा "ख" व "ग" क्षेत्र में काम करने का प्रतिशत भी बहुत कम था। इस मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य यह भी था कि सभी राज्यों के कार्यालय में हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या भी पता चल सकेगी और कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित भी किया जाएगा। "ख" और "ग" क्षेत्रों में हिंदी का इतना कम प्रयोग होने पर देश के सामने बहुत बड़ी चुनौती है कि इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा नही दिया गया। यह प्रश्न भी उठता है कि क्या "ख" और "ग" क्षेत्र में जिस प्रकार हिंदी भाषा का प्रयोग इतना कम है तो क्या हिंदी कभी राष्ट्रभाषा बन पाएगी? इन राज्यों मे लोगों और कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु कई योजनाएं लाई गई हैं जैसे की "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन और समय-समय पर हिंदी का प्रशिक्षण हेतु कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। यद्यपि इन प्रयासों से उनके कार्य करने तथा बोलचाल में काफी सुधार भी हुआ है फिर भी अभी "ख" और "ग" क्षेत्र में आने वाले लोगों को हिंदी में बोलचाल तथा कार्यालय में काम करने के लिए काफी सुधार करने की आवश्यकता है।

भाषा के आधार पर स्थापित होने वाला भारत का सर्वप्रथम राज्य आंध्र प्रदेश है जो कि 1 अक्टूबर 1953 को स्थापित हुआ था। यह तमिलनाडु से पृथक हुआ था लेकिन यहां भी हिंदी आज तक राजभाषा नहीं बन पाई और यह "ग" क्षेत्र में ही रह गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे देश में विभिन्न क्षेत्र भाषा के आधार पर तो बांट दिए गए हैं और देश की एक राष्ट्रभाषा हिंदी को बनाने का प्रयास भी किया जा रहा है परंतु कुछ लोग अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए हिंदी को कभी राष्ट्रभाषा का दर्जा नही देना चाहते है क्योंकि वह लोग हिंदी को इस देश की भाषा नहीं बल्कि किसी पार्टी विशेष या व्यक्ति विशेष की भाषा समझते है इसीलिए हिंदी को उतना सम्मान भी नहीं मिल पा रहा है जिसकी वह हकदार है। इन कारणों से हिंदी राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलने में भी मुश्किल आ रही है।

आज समय की आवश्यकता है कि हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि सभी क्षेत्रों व लोगों में हिंदी को लेकर जागरूकता बढाई जाए जिससे वह हिंदी को लेकर भ्रमित होने की बजाय उस पर गर्व कर सकें। "ख" व "ग" क्षेत्रों में विद्यालयों में बच्चों को उनकी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी का भी ज्ञान अनिवार्य रूप से दिया जाए। सभी कार्यालयों में हिंदी में कामकाज को प्राथमिकता दी जाए। अंग्रेजी में बात करने या कामकाज में उसके प्रयोग से खुद को दूसरों से बेहतर समझने की मानसिकता को भी बदलने की आवश्यकता है। देशवासियों में यह भावना उत्पन्न होनी चाहिए कि हिंदी एक राष्ट्रीय धरोहर है। जैसा कि स्वामी दयानंद जी ने भी कहा है....

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

हिंदी के राष्ट्रभाषा बनने से देशवासियों में एकता की भावना व एक नई ऊर्जा का भी संचार होगा जिससे राष्ट्र की प्रगति में भी सहायता होगी।

"सब की अलग-अलग है भाषा,
पर हिंदी है हमारी मातृभाषा।
कभी ना भूलना हिंदी भाषा,
यही हम सब लोगों की है आशा।
नादान है वे लोग जिन्हें हिंदी भाषा नहीं आती,
उनको तो सिर्फ अपनी ही भाषा आती।
जो हैं हिंदी से अन्जान,
क्या उन्हें नहीं है अपनी राष्ट्रीय धरोहर पर अभिमान।
हिंदी भाषा की तो है बात निराली,
इसके बिना है हिंदुस्तान खाली।"

हरीश चन्द्रा
बहुकार्य कर्मी

राजभाषा अधिनियम, 1963

संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन में गठित राजभाषा आयोग की अनुशंसाओं की गंभीरता एवं क्रियान्वयन संबंधी तात्कालिक कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रपति महोदय द्वारा आदेश,1960 जारी किए गए तथा संविधान के अनुच्छेद 343(3) के प्रावधान के अनुसार राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) बनाया गया। इसमें कुल 9 धाराएँ हैं। अधिनियम के अंतर्गत धारा 3 (3) 26 जनवरी 1965 से लागू है।
अधिनियम की धारा 4 – संसदीय राजभाषा समिति के गठन एवं कर्तव्य से संबंधित है।

अधिनियम की धारा 8 के तहत केन्द्रीय सरकार को इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम बनाने की शक्ति प्रदान की गई है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज एक साथ द्विभाषी (हिंदी व अंग्रेजी दोनों) रूप में जारी करना अनिवार्य है तथा यह दायित्व हस्ताक्षरकर्ता का होता है कि वो इसका अनुपालन सुनिश्चित करें ।
राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेज

1.	सामान्य आदेश (आदेश,अनुदेश, ज्ञापन, नोटिस, परिपत्र आदि)/ General Orders (Orders, Instructions, Circulars, Memorandums, Decisions, etc.)	2.	अधिसूचना / Notifications
3.	प्रेस विज्ञप्तियां/टिप्पणियां / Press Communiques / Releases	4.	संविदाएं / Contracts
5.	करार / Contracts	6.	निविदाएं / Tenders
7.	अनुज्ञा पत्र / Permits	8.	अनुज्ञप्तियां / Agreements
9	सूचना / Notices	10	अनुज्ञा पत्र / Permits
11	नियम / Rules	12	संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी कागज–पत्र (रिपोर्टों के अलावा) / Officials papers laid before a house or both the houses of parliament (Other than reports)
13.	संसद में प्रस्तुति प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन संसद में प्रस्तुति हेतु राजकीय कागजात / Administrative or other reports	14.	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें (संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा) / Official papers to be laid in parliament

राजभाषा संकल्प, 1968

उद्देश्य: सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करना है । (प्रतिवर्ष राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है।) हिंदी के प्रयोग व प्रसार हेतु उठाए कदमों तथा प्रगति की समीक्षा को संसद के दोनों सदनों में वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत करना है। हिंदी व संविधान की आठवीं अनुसूची में समाविष्ट भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने के साथ–साथ त्रिभाषा –फॉर्मूला लागू करना है ।

राजभाषा नियम, 1976

राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 8 के अंतर्गत अधिनियम के प्रयोजनों को लागू करने के लिए 'नियम' बनाने का अधिकार दिया गया। सरकार ने राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 बनाए, जिसे 17 जुलाई, 1976 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया । इन नियमों के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की परिभाषा में सरकारी उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को भी लिया गया है। इन नियमों का विस्तार तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है। राजभाषा नियम, 1976 के प्रावधानों के अनुरूप भारत सरकार द्वारा हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को भाषिक स्तर पर तीन क्षेत्रों (क्षेत्र 'क', 'ख' एवं 'ग') में वर्गीकृत किया गया है:–

क्षेत्र 'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान, और उत्तर प्रदेश राज्य, तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र है।

क्षेत्र 'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दादरा व नगर हवेली एवं दमन व दीव संघ राज्य क्षेत्र हैं।
क्षेत्र 'ग'	उपर्युक्त निर्दिष्ट के अतिरिक्त सभी राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं।

नियम 5.

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिंदी में (ही) दिए जाएंगे। इसका उल्लंघन किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए ।

नियम 6. हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों का प्रयोग

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित और जारी किए जाते हैं

नियम 7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि

कोई स्टाफ / कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है। हिंदी में लिखे अथवा हिंदी में हस्ताक्षरित अभ्यावेदन, आवेदन आदि के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएंगे ।

नियम 8 (4)

अधिसूचित कार्यालयों के प्रवीणता प्राप्त स्टाफ सदस्यों को हिंदी में शत–प्रतिशत कार्य करने हेतु व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाते हैं ।

नियम 9. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त

यदि किसी स्टाफ सदस्य ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है **या**

स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था **या**

वह इन नियमों के उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, तो उसके बारे में समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

यदि किसी स्टाफ सदस्य ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है या उसने प्राज्ञ या अन्य निर्धारित परीक्षा या केन्द्र सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण की हो **या**

वह इन नियमों के उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में समझा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है ।

नियम 10 (4)

केन्द्रीय सरकार/बैंक की जिन शाखाओं/कार्यालयों में 80 प्रतिशत अथवा इससे अधिक स्टाफ सदस्यों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन शाखाओं/कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे। इसके लिए प्रत्येक शाखा / कार्यालय में हिंदी ज्ञान रोस्टर अद्यतन रखा जाए। बैंक के HRMS में ऑन लाइन हिंदी ज्ञान रोस्टर उपलब्ध हैं ।

नियम 11

इसके अंतर्गत निम्नलिखित सामग्री का द्विभाषिक / अपेक्षानुसार त्रिभाषिक रूप में होना अनिवार्य है:– मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री की अन्य मदें, शाखा / कार्यालय के रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नामपट्ट (name-plates), सूचना पट्ट (sign& boards), पत्रशीर्ष (letter&head), और लिफाफों पर प्रिंटेड लेख, मुहर (Stamp) आदि ।

नियम 12: अनुपालन का उत्तरदायित्व

प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है। और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करना अनिवार्य है तथा इसके लिए जाँच – बिंदु बनाना एवं निगरानी आवश्यक है।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना - वर्ष 2022 के अंतर्गत पुरस्कृत कार्मिक

क्र. सं.	अधिकारी / कर्मचारी का नाम (श्री / श्रीमती / कुमारी) / पदनाम
1.	बिनोद कुमार, शाखा प्रबंधक
2.	वीरेन्द्र सिंह पाल, कार्यालय अधीक्षक
3.	निशांत कुमार, सहायक
4.	सिंह अजितकुमार, सहायक
5.	सोनु कुमार रंजन, सहायक
6.	सरजीत, सहायक
7.	आशीष भवानी, सहायक (तदर्थ)
8.	अमित सिसोदिया, प्रवर श्रेणी लिपिक
9.	राम राज मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक
10.	चन्द्र प्रकाश मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक

क्र. सं.	अधिकारी / कर्मचारी का नाम (श्री / श्रीमती / कुमारी) / पदनाम
11.	पंकज मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक
12.	रिंकु कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक
13.	मनीष श्रीवास्तव, प्रवर श्रेणी लिपिक
14.	चौथा राम चौधरी, प्रवर श्रेणी लिपिक
15.	मलिक उल आसिफ पठान, प्रवर श्रेणी लिपिक
16.	जितेन्द्र त्रिवेदी, प्रवर श्रेणी लिपिक
17.	तेजस परमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
18.	नरसी राम मीना, अवर श्रेणी लिपिक
19.	अंकेश अंकित, अवर श्रेणी लिपिक

मूल हिंदी टिप्पण - आलेखन प्रोत्साहन योजना - वर्ष 2022-23 के अंतर्गत पुरस्कृत विजेता

क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम (श्री / श्रीमती / कुमारी)	शाखा / शाखा कार्यालय का नाम	पुरस्कार श्रेणी	राशि (रुपये में)
1.	निशांत कुमार, सहायक	बीमा शाखा - II	प्रथम	5,000/-
2.	बिनोद कुमार, शाखा प्रबंधक	शाखा कार्यालय, नडियाद & पानीगेट	प्रथम	5,000/-
3.	चौथा राम चौधरी, प्रवर श्रेणी लिपिक	रोकड़ शाखा	द्वितीय	3,000/-
4.	अंकेश अंकित, अवर श्रेणी लिपिक	बीमा शाखा - I	द्वितीय	3,000/-
5.	आशीष भवानी, सहायक (तदर्थ)	बीमा शाखा - I	द्वितीय	3,000/-
6.	सुरेन्द्र कुमार, सहायक (तदर्थ)	प्रशासन शाखा	तृतीय	2,000/-
7.	सोनू कुमार रंजन, सहायक	निरीक्षण एवं समन्वय शाखा	तृतीय	2,000/-
8.	राम राज मीना,	सामान्य शाखा	तृतीय	2,000/-
9.	नरसी राम मीना, अवर श्रेणी लिपिक	निरीक्षण एवं समन्वय शाखा	तृतीय	2,000/-
10.	मालिक उल आसिफ पठान, प्रवर श्रेणी लिपिक	बीमा शाखा - I	तृतीय	2,000/-

वर्ष 2023 में आयोजित हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिताओं के विजेता

1.	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता 18.09.2023		
	हिंदी भाषी		
क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम (श्री / श्रीमती / कुमारी)	पुरस्कार श्रेणी	राशि (रुपये में)
1.	रिंकु कुमार मीणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	सुरेन्द्र कुमार, सहायक	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	राकेश कुमार सैनी, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	हिरेन नाग्रेचा, सहायक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
5.	हितेश भाभोर, सहायक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
	हिंदीतर भाषी		
1.	सुनीत सुदर्शनन, सहायक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	अमिता नायर, कार्यालय अधीक्षक	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	प्रोत्साहन	रु. 500/-
5.	गुगुलोथ कुमार विवेक, बहुकार्य कर्मी	प्रोत्साहन	रु. 500/-
2.	हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता 20.09.2023		
	हिंदी भाषी		
1.	आशीष पांडे, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	राकेश कुमार सैनी, बहुकार्य कर्मी	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	तरनप्रीत कौर, कार्यालय अधीक्षक	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	हिरेन नाग्रेचा, सहायक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
5.	सुरेन्द्र कुमार, सहायक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
	हिंदीतर भाषी		
1.	अमीता नायर, कार्यालय अधीक्षक	प्रथम	रु. 1,800/-

वर्ष 2023 में आयोजित हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिताओं के विजेता

3.	हिंदी वाक् प्रतियोगिता 21.09.2023		
	हिंदी भाषी		
1.	आशीष पांडे, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	पूर्णिमा सिसोदिया, बहुकार्य कर्मी	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	मनीष श्रीवास्तव, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	रौनक परमार, सहायक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
5.	तरनप्रीत कौर, कार्यालय अधीक्षक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
	हिंदीतर भाषी		
1.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	गुगुलोथ विवेक कुमार, बहुकार्य कर्मी	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	हिंदी निबंध प्रतियोगिता 22.09.2023		
	हिंदी भाषी		
1.	आशीष पांडे, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	हिरेन नाग्रेचा, सहायक	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	मनीष श्रीवास्तव, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय	रु. 1,200/-
4.	तरनप्रीत कौर, कार्यालय अधीक्षक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
5.	रिंकु कुमार मीणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन	रु. 500/-
	हिंदीतर भाषी		
1.	विस्लावत बालू, बहुकार्य कर्मी	प्रथम	रु. 1,800/-
2.	परिमल घोषाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	रु. 1,500/-
3.	गुगुलोथ विवेक कुमार, बहुकार्य कर्मी	तृतीय	रु. 1,200/-

उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा का क्षेत्राधिकार

- उप क्षेत्रीय कार्यालय, वड़ोदरा
- शाखा कार्यालय
- औषधालय सह शाखा कार्यालय
- प्रस्तावित शाखा कार्यालय
- प्रस्तावित औषधालय सह शाखा कार्यालय

मैं स्वयं और अपने परिवार के लिए आधार को कैसे सीड कर सकता हूं

नियोक्ता के पास जाएं

ईएसआईसी शाखा कार्यालय जाएं

स्वयं द्वारा आधार सीडिंग

1. आईपी पोर्टल https://esic.gov.in पर लॉग इन करें
2. आधार सीडिंग पर क्लिक करें
3. नियोक्ता को चुनें
4. आधार सीड करने के लिए यहाँ क्लिक करें
5. नियम व शर्तों पर सहमती दें। आधार दर्ज करें
6. ओटीपी की पुष्टि करें
7. यदि डाटा मेल खाता है तो आधार सीड हो जाएगा
8. ABHA का सृजन

ध्यान दें: यदि डाटा मेल नहीं खाता है तो नियोक्ता से सत्यापन के लिए स्वतः रूप से एक अनुरोध सृजित होगा जो अनुमोदन के लिए शाखा कार्यालय भेजा जायेगा। एक बार सत्यापित होने व अनुमोदित हो जाने पर आधार सीड हो जायेगा और **ABHA** नंबर सृजित हो जायेगा ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
उर्मि सोसाइटी, अलकापुरी, वडोदरा 390007 (गुजरात)
फोन: 0265-2961442 । वीओआईपी: 20265006
ईमेल: dir-vadodara@esic.gov.in । वेबसाइट: www.esic.gov.in